हमारी पोथी

भाग-4

पाठ्य पुस्तक लेखन एवं निर्माण समिति

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बेइंतिहा मेहरबान और रहम फ़रमानेवाला है।

दो शब्द

मर्कज़ी दर्सगाह रामपुर के भूतपूर्व नाज़िम (व्यवस्थापक) जनाब अफ़ज़ल हुसैन साहब ने लगभग आधी शताब्दी पहले भारतीय मुसलमानों की नई पीढ़ी की आरम्भिक कक्षाओं के लिए पाठ्य पुस्तकों की एक अत्यन्त उपयोगी शृंखला तैयार की थी जिसमें बच्चों के मनोविज्ञान, मानसिक स्तर, उम्र, रुचि और सामाजिक अपेक्षाओं का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया था। अल्लाह की कृपा से ये पुस्तकें पूरे देश में लोकप्रिय हुईं और इन पुस्तकों ने छात्र-छात्राओं के मन-मस्तिष्क और विचारों को इस्लामी रंग में रंगने का बहुत ही उल्लेखनीय कार्य किया। वर्तमान शृंखला में उनके द्वारा निर्दिष्ट पथ पर चलने का पूरा-पूरा प्रयास किया गया है। अल्लाह तआला मरहूम जनाब अफ़ज़ल हुसैन साहब की सेवा को स्वीकार करके उनपर अपनी कृपा-वर्षा करे। आमीन!

पाठ्य पुस्तकों का पुनरीक्षण, संशोधन और नवीनीकरण एक सतत् लाभदायक और अनिवार्य प्रक्रिया है। हमने भी अपनी सभी पाठ्य पुस्तकों को और अधिक उपयोगी तथा समयानुकूल बनाने के लिए इन्हें नये सिरे से तैयार करने की योजना बनाई है।

भाषा बच्चों के व्यक्तित्व के विकास का एक महत्वपूर्ण साधन है। भाषा की पाठ्य पुस्तकों की तैयारी के दौरान हमने इस बात का विशेष ध्यान रखा है कि भाषा-बोध के लिए ऐसी पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई जाए जिससे बच्चों में भाषा की सभी आधारभूत कुशलताएँ — सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने चिन्तन-मनन और अध्ययन की क्षमताएँ — विकसित हो जाएँ तथा उनमें अतिरिक्त अध्ययन के प्रति रुचि बढ़े। हमने यह प्रयास भी किया है कि जीवन के अनुकूल विषय-वस्तु प्रस्तुत की जाए जिससे छात्र-छात्राओं के अन्दर वांछित जीवन-मूल्यों, मानवीय सदगुणों के बीज अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित और फलित हों और उनका सर्वांगीण विकास सम्भव हो सके।

पाठ्य पुस्तकों की तैयारी के समय हमने बच्चों की उम्र, उनकी अपेक्षा तथा आवश्यकता, अभिरुचि, मनोविज्ञान और बौद्धिक क्षमता का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा है।

हमने अपनी पाठ्य पुस्तकों में ऐसी सामग्री प्रस्तुत करने की कोशिश की है, जिससे बच्चों को अपने परिवेश और वातावरण के प्रति सचेत तथा जागरूक बनाया जा सके, उनके अन्दर इससे सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त करने के प्रति अभिरुचि उत्पन्न हो और उनके कार्य-कलापों में यथोचित परिवर्तन हो। साथ ही, ये चीज़ें उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से अवगत भी करा सकें।

प्रत्येक पाठ के अन्त में पर्याप्त अभ्यास दिए गए हैं, जो छात्र-छात्राओं में न केवल भाषा-बोध, लेखन, पाठ्य सामग्री को समझने और स्मरण रखने में सहायक होंगे, बल्कि उनमें चिन्तन-मनन की क्षमता और व्यक्तिगत रूप से अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करेंगे। ये अभ्यास बच्चों के ज्ञान में उत्तरोत्तर वृद्धि और विकास के साधन तो सिद्ध होंगे ही, उनकी मानसिक और शैक्षणिक क्षमता के विकास में भी सहायक होंगे।

हम अपने उन सभी मित्रों और उन सभी महानुभावों के आभारी हैं, जिन्होंने पुस्तक की तैयारी के क्रम में विभिन्न प्रकार से सहयोग दिया है। हम उन सज्जनों के भी आभारी हैं, जिनकी कविताएँ, लेख, निबन्ध और पहेलियाँ इत्यादि ज्यों-की-त्यों या कुछ परिवर्तन के साथ इस पुस्तक में सम्मिलित हैं।

अल्लाह तआला की कृपा-छाया सदैव उन महानुभावों को सुख-शान्ति प्रदान करती रहे।

हमने इस पुस्तक को यथासम्भव सुन्दर और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करके अधिक-से-अधिक उपयोगी और लाभदायक बनाने का प्रयास किया है। हम अपने प्रयास में किस हद तक सफल हो सके हैं, इसका वास्तविक मूल्यांकन तो शिक्षकगण, अभिभावक और पढ़ने-पढ़ाने में रुचि रखनेवाले ज्ञानीजन के बहुमूल्य सुझावों, विचारों और टिप्पणियों से ही हो सकेगा।

21.07.2004 **मुहम्मद अशफ़ाक़ अहमद**

दिल्ली निगराँ (निरीक्षक)

विषय-सूची

पाठ - 1

हमारा मालिक

हे धरती आकाश के मालिक ।
सूर्य, चन्द्र, प्रकाश के मालिक ॥

बादल से पानी बरसाए ।
ठंडी-ठंडी हवा चलाए ॥

पौधे-पेड़ उगाता है तू ।
उनपर फूल खिलाता है तू ॥

जग का दाता तू ही है ।
मूल विधाता तू ही है ॥

स्वामी तू हम तेरे दास ।
तुझसे बाँधी हमने आस ॥

ईश दया की भीख हमें दे ।
सत्यधर्म की सीख हमें दे ॥
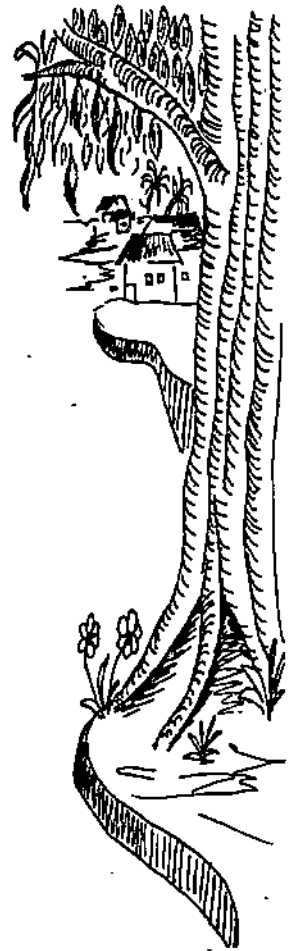
अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

सूर्य = सूरज	चन्द्र = चाँद	प्रकाश = रौशनी
जग = दुनिया	दाता = देनेवाला, दानी	मूल = असल
विधाता = बनानेवाला	स्वामी = मालिक, ईश्वर	दास = गुलाम
आस = उम्मीद	ईश = खुदा, अल्लाह	सत्यधर्म = सच्चा द

सीख देना = शिक्षा देना, तालीम देना

(ख) इन पंक्तियों को पूरा करो —

(1) हे धरती .... के मालिक ।

सूर्य, चन्द्र .... के मालिक ॥

(2) पौधे-पेड़ उगाता है तू ।

.... ॥

(3) .... ।

मूल विधाता तू ही है ॥

(ग) इन शब्दों को पाँच-पाँच बार लिखो —

सूर्य चन्द्र प्रकाश स्वामी ठंडी

मूल विधाता आस ईश धरती

(घ) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो —

(1) हमारा मूल विधाता कौन है?

(2) हम स्वामी के दास क्यों हैं?

(3) संसार की सभी वस्तुओं को किसने पैदा किया?

(4) हम उससे किस चीज़ की भीख माँगते हैं?

(ङ) इस कविता को याद करो ।

पाठ - 2

स्वामी कौन?

समीना के पास एक नन्हा-सा मुर्ग़ी का बच्चा है। समीना उसे बहुत प्यार करती है। अपने थ लिए-लिए फिरती है। उसे मुन्ना-मुन्ना कहती है।

समीना के घर में एक तोता भी है। उसने उसे सिखाया-पढ़ाया है, ज्ञानी बनाया है।

एक दिन की बात है। समीना नमाज़ पढ़ रही थी। मुर्ग़ी के बच्चे ने देखा। उसे अचरज ा। वह दौड़ा-दौड़ा मुर्ग़ी के पास आया और बोला :

चूँ, चूँ, चूँ ! अम्मी-अम्मी! यह देखो, समीना बाजी क्या कर रही हैं?

मुर्ग़ी तुरन्त बोली : कट-कट-कटाक! समीना नमाज़ पढ़ रही है। अपने मालिक को याद कर ी है। अपने पालक की प्रशंसा कर रही है। अपने स्वामी को प्रसन्न कर रही है। अपने शासक सलामी दे रही है।

मुन्ना बोला : चूँ, चूँ, चूँ !

न है मालिक? कौन है पालक?

न है स्वामी? कौन है शासक?

भी जानूँ, मैं भी पूजूँ।

भी उसको राजा मानूँ।
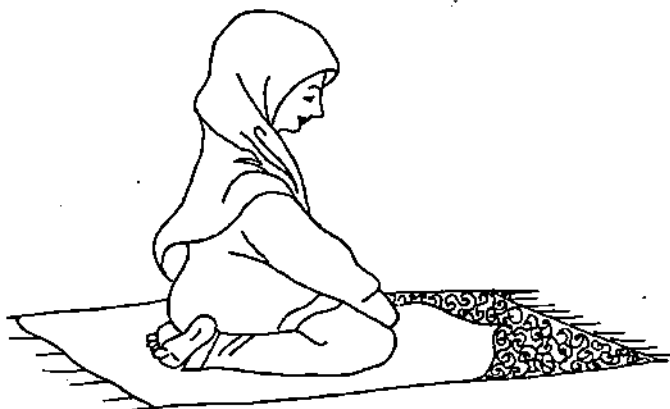
मुर्ग़ी बोली : कट-कट-कटाक !

मैं न ज्ञानी, मैं न सुजानी,

मैं न आलिम, मैं न पंडित,

मैं न जानूँ, मैं न समझूँ,

जाकर अब्बा जान से पूछो ।
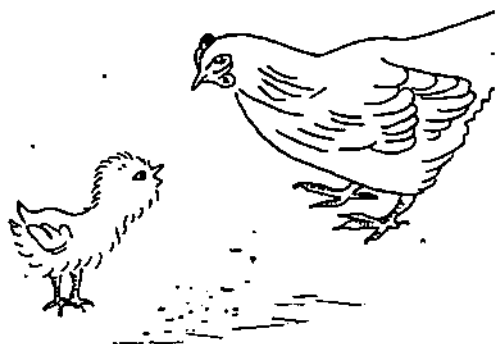
मुन्ना आगे बढ़ा, मुर्ग़े के पास गया ।

आदर से बोला : चूँ, चूँ, चूँ!

मुर्ग़ा बोला : कुकड़ूँ-कूँ! क्या है मुन्ना? कैसे आए?

मुन्ना बोला : चूँ, चूँ, चूँ ! अब्बा जान!

कौन है मालिक? कौन है पालक?

कौन है स्वामी? कौन है शासक?

मैं भी जानूँ, मैं भी पूजूँ,

मैं भी उसको राजा मानूँ ।

मुर्ग़ा बोला : कुकड़ूँ-कूँ!

मैं न ज्ञानी, मैं न सुजानी,

मैं न आलिम, मैं न पंडित,

मैं न जानूँ, मैं न समझूँ,

जाकर मिट्ठू मियाँ से पूछो ।
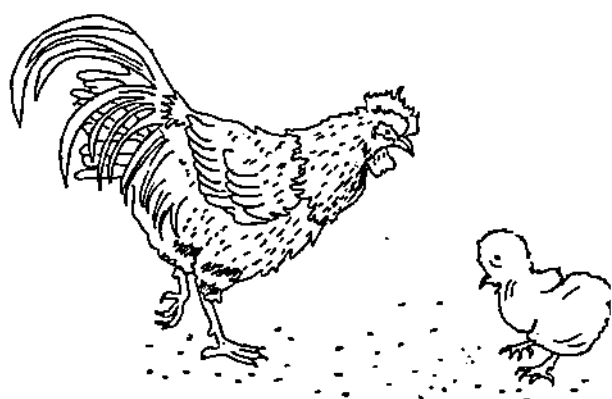
मुन्ना आगे बढ़ा । तोते के पास गया । बोला : चूँ, चूँ, चूँ!

तोता बोला : टें-टें! क्या है मुन्ना? कैसे आए?

मुन्ना बोला : चूँ, चूँ, चूँ! चाचा मियाँ!

ौन है मालिक? कौन है पालक?

ौन है स्वामी? कौन विधाता?

ं भी जानूँ, मैं भी पूजूँ,

ं भी उसको राजा मानूँ।
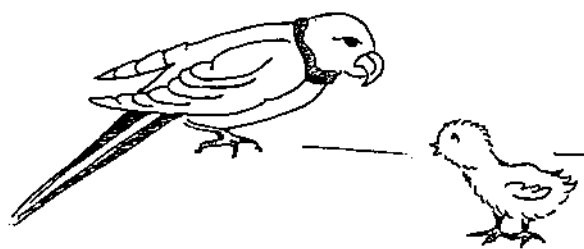
तोता बोला : मैं हूँ ज्ञानी, मैं हूँ सुजानी,

मैं हूँ मुल्ला, मैं हूँ पंडित।

ुझे समीना ने पाला है, सिखाया-पढ़ाया और ज्ञानी बनाया है। लो सुनो, रब ने सारी सृष्टि रची, ही सबका मालिक है। रब ही सब कुछ देता है, वही सबका पालक है। सारी सृष्टि उसी की है, ही सारा प्रबन्ध भी करता है। अत: वही हम सबका स्वामी एवं शासक है।

मुन्ना ने जान लिया, अपने रब को पहचान लिया।

रब को शासक मान लिया और उसका आज्ञाकारी बन गया।

अभ्यास

क) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

ज्ञानी = जानकार, योग्य, समझदार

बाजी = बड़ी बहन

शासक = हाकिम

आलिम = इल्मवाला, ज्ञानवाला

विधाता = बनानेवाला

प्रबन्ध = इन्तिज़ाम

आज्ञाकारी = हुक्म माननेवाला, फ़रमाँबरदार

अचरज = हैरत, ताज्जुब

प्रशंसा = तारीफ़, बड़ाई

सुजानी = अच्छी तरह जाननेवाला

पंडित = विद्वान, बहुत ज़्यादा जानकार

सृष्टि = रचना, तख़लीक़, अल्लाह की बनाई हुई चीज़ें

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो –

(1) समीना किसको मुन्ना कहकर पुकारती है?

(2) मुर्ग़ी के बच्चे को समीना की किस बात पर अचरज हुआ?

(3) मुन्ना क्या जानना चाहता था?

(4) समीना ने तोते को क्या बनाया था?

(5) स्वामी के क्या गुण होते हैं?

(ग) इन वाक्यों को पूरा करो –

(1) मैं न ...., मैं न सुजानी,

(2) कौन है स्वामी? कौन है ....?

(3) मैं न ...., मैं न पंडित,

(4) मैं भी उसको .... मानूँ।

(घ) करो –

अल्लाह के कितने नाम इस पाठ में आए हैं। उन्हें याद करो तथा अल्लाह के और न

अपने शिक्षक से पूछो।

पाठ - 3

चिड़िया-चिड़ा

एक थी चिड़िया, एक था चिड़ा । दोनों साथ-साथ रहते थे । उनका घोंसला नहीं था, इसलिए वे रात पेड़ पर गुज़ारते थे । उस पेड़ पर अन्य पंछियों के भी घोंसले थे । वसंत ऋतु आई । दोनों ने सोचा, 'आओ घोंसला बनाएँ, रहने का प्रबन्ध करें ।' घोंसला बनाने के लिए दोनों ने मिलकर कार्य प्रारम्भ किया । वे बड़े कठोर परिश्रम से घोंसला बनाने के लिए उपयुक्त घास-फूस और तिनके चुनकर लाए । सप्ताह-भर में उन्होंने अपना घोंसला तैयार कर लिया । घोंसला बनते ही दोनों बेहद प्रसन्न हुए । अपने मालिक का शुक्र अदा किया ।

चिड़िया और चिड़ा खुशी-खुशी घोंसले में रहने लगे । चिड़िया ने चार दिनों में चार अंडे दिए । दोनों मिलकर बारी-बारी अंडों को गर्मी पहुँचाने के लिए अंडों पर बैठते । अंडे सेने की यह प्रक्रिया एक पखवाड़ा यानी पन्द्रह दिनों तक चलती रही । दोनों ने इस काम में कोई कसर नहीं रखी ।

ईश्वर की लीला अपरम्पार है । उसकी कृपा से अंडों में बच्चे बन गए । बच्चों ने अंडों के भीतर से खट-खट चोंच मारी तो अंडे फूट गए । बच्चे बाहर निकल आए । नन्हें-नन्हें बच्चे, आँखें बंद, न पर, न पुर्ज़े, जैसे मांस की बोटी । माँ-बाप दाने और कीड़े चुनकर लाते और उनकी चोंच में डालते । इस प्रकार बच्चों का पालन-पोषण होने लगा । वे बढ़ते रहे । धीरे-धीरे उनके शरीर पर पंख निकल आए । माँ ने उन्हें फुर्र-फुर्र उड़ना सिखाया । चोंच से कीड़े पकड़ना सिखाया । कट-कट दाना चुगना सिखाया ।

अब बच्चे अपने पैरों पर खड़े हो चुके थे । वे अपनी आजीविका स्वयं प्राप्त कर सकते थे
एक दिन माँ ने उनसे कहा, "ईश्वर की धरती बहुत विस्तृत है । जाओ, और अपनी आजीवि
स्वयं ढूँढो । अब तुम स्वावलम्बी बन चुके हो । ईश्वर तुम्हारी सहायता करे ।"

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

प्रारम्भ = शुरू

उपयुक्त = मुनासिब, ठीक

प्रक्रिया = तरीक़ा, ढंग

लीला = करिश्मा

अपरम्पार = जिसका पार न पा सके, असीम

आजीविका = रोज़ी

विस्तृत = लम्बा-चौड़ा

स्वावलम्बी = आत्मनिर्भर, अपना बोझ खुद उठानेवाला

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो —

(1) चिड़िया-चिड़े ने घोंसले के लिए क्या साधन जुटाया?

(2) चिड़िया-चिड़े ने बच्चों का पालन-पोषण कैसे किया?

(3) बच्चे कैसे स्वावलम्बी बने?

(ग) खाली जगहों को भरो —

(1) .... ऋतु आई ।

(2) चिड़िया ने .... दिनों में .... अंडे दिए ।

(3) ईश्वर की .... अपरम्पार है ।

(4) माँ-बाप .... चुनकर लाते ।

(5) अपनी .... स्वयं ढूँढो ।

व्याकरण

) **इन मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग करो —**

कोई कसर बाक़ी न रखना, अपने पैरों पर खड़े होना ।

) **निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़ो —**

(1) अहमद पढ़ रहा है ।   (2) कुर्सी पर बैठो ।

(3) मुझे प्यास लगी है ।   (4) वह पटना गया ।

ऊपर के वाक्यों में अहमद व्यक्ति का, कुर्सी वस्तु का, पटना स्थान का और प्यास भाव का है । इसलिए अहमद, कुर्सी, पटना और प्यास संज्ञाएँ हैं ।

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम की जानकारी देनेवाले शब्दों को **'संज्ञा'** कहते

निम्नलिखित वाक्यों में आई हुई संज्ञाओं को पहचानो और लिखो —

(1) जमील खेल रहा है ।   ....

(2) सलमा पढ़ रही है ।   ....

(3) यह आम मीठा है ।   ....

(4) मैं लखनऊ जाऊँगा ।   ....

(5) चारों ओर हरियाली फैली है ।   ....

पाठ - 4

नअ़त

जो सच्चे नायक हैं जग के
काम सभी हैं जिनके अच्छे
रहमत बनकर आनेवाले
रब के प्यारे, सबके प्यारे
उनका है शुभ नाम मुहम्मद
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

जिसने सच्चा दीन सिखाया
ईश्वर का सन्देश सुनाया
हमको सीधा पंथ दिखाया
जग में रब का राज रचाया
उनका है शुभ नाम मुहम्मद
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
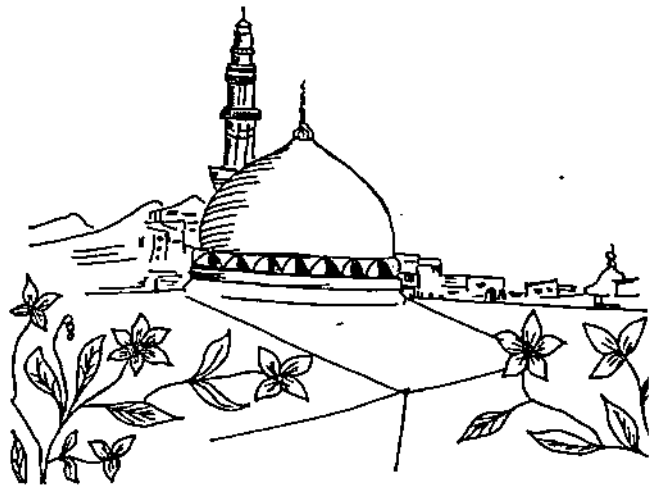
यह कुरआन सुनाया जिसने
इसका पथ दर्शाया जिसने
अत्याचार मिटाया जिसने
परहित पर उकसाया जिसने

उनका है शुभ नाम मुहम्मद
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

उनकी शिक्षा को अपनाओ
उनकी बातों को फैलाओ
सबको उनकी राह दिखाओ
बस उनको आदर्श बनाओ

उनका है शुभ नाम मुहम्मद
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

नायक = नेता, सरदार
रहमत = दयालुता
शुभ = अच्छा
सन्देश = पैग़ाम
पंथ = रास्ता
पथ = रास्ता
दर्शाया = दिखाया
आदर्श = नमूना

अत्याचार = ज़ुल्म　　　परहित = दूसरों की भलाई, परोपकार

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम = उनपर अल्लाह की रहमत और सलामती हो।

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो –

(1) जग के सच्चे नायक कौन हैं?

(2) ईश्वर के दीन का सच्चा सन्देश हम तक किसने पहुँचाया?

(3) अल्लाह का भेजा हुआ कुरआन हम तक किसने पहुँचाया?

(4) हमें अपना आदर्श किसे बनाना चाहिए?

(5) मुहम्मद *(सल्ल०)* की पाँच शिक्षाओं को लिखो?

(ग) इन शब्दों को पाँच बार लिखो –

सच्चे　अच्छे　मुहम्मद　पंथ　अत्याचार　आदर्श　शिक्षा।

(घ) इन पंक्तियों को पूरा करो –

(1) जिसने सच्चा .... सिखाया

(2) हमको सीधा .... दिखाया

(3) सबको उनकी .... दिखाओ

(4) बस उनको .... बनाओ

(ङ) इस नअ़त को याद करो और कक्षा में सुनाओ।

पाठ - 5

गाँव की सैर

ख़ालिद मेरे साथ लखनऊ में पढ़ता है । छुट्टी में जब वह अपने गाँव मुहम्मदपुर जाने लगा । मैं भी उसके साथ उसके गाँव गया । उसके निमंत्रण पर मैं पहले ही अपने माता-पिता से जाने की नुमति ले चुका था । ट्रेन द्वारा जब हम मुहम्मदपुर पहुँचे तो ख़ालिद के पिता और उसके भाई मारी प्रतीक्षा में प्लेटफ़ार्म पर खड़े थे । उनको हमारे पहुँचने की ख़बर पहले ही मिल चुकी थी । म दोनों ट्रेन से नीचे उतरे । सलाम किया, फिर बैलगाड़ी में सामान रखकर घर की ओर चल पड़े । ब्रतों के बीच कच्चे रास्ते से होते हुए हमारी बैलगाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी । चारों ओर रियाली थी । खेतों में सरसों और मटर के रंग-बिरंगे फूल अति सुन्दर लग रहे थे । किसान कहीं

रहट से, तो कहीं पंपसेटों से सिंचाई कर रहे थे । हम इन खेतों के सुन्दर दृश्य का आनन्द लेते
ख़ालिद के घर पहुँच गए ।

घर पहुँचते ही मैंने सब लोगों को सलाम किया । फिर ख़ालिद ने अपने परिवार के
का परिचय कराया । उसने अपनी माँ से मिलाया । उन्होंने प्यार से मेरी पीठ थपथपाई । मैं
समय आनन्द-विभोर हो उठा । उस स्नेह को पाकर मुझे ऐसा लगा कि वह ख़ालिद की ही नहीं,
भी माँ हैं । उनका प्यार वास्तविक प्यार था । परिचय के बाद हम लोगों ने स्नान किया और व
बदल कर नाश्ते के लिए बैठ गए । मुझे ऐसा लगने लगा कि मैं अपने ही घर में हूँ ।

दूसरे दिन हम गाँव की सैर को निकले । वहाँ कच्चे मकान अधिक थे । मिट्टी की दी
पर फूस के छप्पर पड़े हुए थे । कहीं-कहीं झोंपड़ियाँ और पक्के मकान भी थे । घरों के स
हरे-भरे वृक्ष भी थे । वृक्ष के नीचे बैल, भैंसें, गाएँ एवं बकरियाँ बँधी थीं । पशुओं को ि
चारा-पानी दे रही थीं । पूछने पर ख़ालिद ने बताया कि इनके पुरुष खेतों पर काम करने जा
और स्त्रियाँ घर का काम करने के साथ-साथ पशुओं की देख-भाल भी करती हैं । कुछ स्त्रियाँ र
पर भी काम करने जाती हैं ।

हम कुछ ही दूर चले थे कि एक स्थान पर सोंधी-सोंधी सुगन्ध पाकर मैं रुक गया । ख़ा
से पूछने पर उसने बताया कि गन्ने के रस से गुड़ बनाया जा रहा है । मेरी जिज्ञासा को देख
ख़ालिद मुझे वहाँ ले गया । वहाँ मैंने पहली बार बैलों को कोल्हू खींचते हुए देखा । एक व्य
एक साथ कई-कई गन्ने कोल्हू में लगा रहा था । गन्ने से रस निकलकर एक बरतन में इकट्ठा
रहा था । फिर रस को एक कड़ाह में पकाकर गुड़ बनाया जा रहा था ।

एक बूढ़े व्यक्ति ने हम से बड़े प्यार से कहा, "बेटे! रस पी लो, थोड़ा गुड़ खा लो
यह कहकर उन्होंने एक बरतन में ताज़ा रस और दूसरे बरतन में गर्म-गर्म गुड़ लाकर दिया । ह
रस पिया और मज़े ले-लेकर गुड़ खाया ।

खेतों में घूमते-फिरते देर हो गई थी, अतः हम घर लौट आए । शाम को मसजिद में हमने की नमाज़ अदा की । फिर मैं, ख़ालिद और कुछ अन्य लड़के खेलने चले गए । गाँव में एक ाब था । तालाब के किनारे एक स्कूल था । स्कूल के मैदान में हमने क्रिकेट खेला । मैदान में भी बहुत-से बच्चे खेल रहे थे । हम मग़रिब तक खेलते रहे । अज़ान सुनते ही हमने खेल न किया । वुज़ू करके मसजिद में जमाअत के साथ नमाज़ अदा की, फिर घर लौट आए । -भर के क्रिया-कलाप की आपस में चर्चा रही । फिर सबने मिलकर रात का खाना खाया । इशा नमाज़ के बाद हम लोग सोने की तैयारी कर रहे थे कि ख़ालिद के बड़े भाई ने कहा,'' चलो, लोगों को चौपाल दिखा लाएँ ।'' हम लोग चौपाल तक गए । वहाँ एक बड़ा-सा चबूतरा था । पर बहुत-से लोग बैठे थे । हम लोग भी बैठ गए । वहाँ विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श हुआ । ी ने खेती-बाड़ी पर, किसी ने गाँव की बिगड़ती दशा पर तो किसी ने देश-विदेश की राजनीति खुलेदिल से बातचीत की । गाँव का चौपाल मुझे ऐसा लगा जैसे चौपाल नहीं, किसी सभा का है ।

इस प्रकार पूरी छुट्टी हमने मुहम्मदपुर गाँव में बिताई । वहाँ मेरे कई मित्र और जाननेवाले गए, जिनके साथ हम लोग इधर-उधर घूमने-फिरने जाते और खेलते-कूदते रहते । छुट्टी समाप्त पर जब हम लौट रहे थे तो स्टेशन तक बहुत-से लोग हमें छोड़ने आए । वहाँ के लोगों से ा अपनत्व हो गया था कि बिछड़ने से हम सब दुखी थे । गाड़ी छूटते समय मैंने देखा कि मेरे मित्रों की आँखों में आँसू थे । उस समय मैं भी अपने आँसू न रोक सका ।

गार्ड ने हरी झण्डी दिखाई । गाड़ी ने सीटी बजाई और फिर मंज़िल की ओर चल पड़ी ।

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

निमंत्रण = दावत — अनुमति = इजाज़त

प्रतीक्षा = इंतिज़ार — अति = बहुत

रहट = कुएँ से पानी निकालने का एक प्रकार का यंत्र

दृश्य = मंज़र, नज़ारा — आनन्द = खुशी, मज़ा, लुत्फ़

परिचय = जान-पहचान — आनन्द-विभोर = खुशी से फूले न समाना

स्नेह = प्यार — जिज्ञासा = जानने की ख़्वाहिश, जानने की इच्

कोल्हू = रस निकालने का यंत्र — कड़ाह = लोहे का बड़ा गोल बरतन

अतः = इसलिए — अन्य = दूसरे

चौपाल = बैठक, बरामदा, बैठका — विभिन्न = अलग-अलग, तरह-तरह

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो —

(1) छुट्टी में ख़ालिद अपने मित्र के साथ कहाँ गया?

(2) ख़ालिद और उसका मित्र स्टेशन से किस सवारी द्वारा गाँव पहुँचे?

(3) ख़ालिद का मित्र क्यों आत्म-विभोर हो उठा?

(4) गाँव में कैसे-कैसे मकान थे?

(5) खेत में ख़ालिद और उसके मित्र ने क्या खाया और पिया?

(6) गुड़ किस चीज़ से बनाया जा रहा था?

(7) गाँव के चौपाल में क्या होता है?

(8) गाँव का सभा-मंच किसे कहा गया है?

(ग) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो —

(1) रंग-बिरंगे फूल .... लग रहे थे ।

(2) वह ख़ालिद की ही नहीं, मेरी भी ....हैं ।

(3) एक स्थान पर सोंधी-सोंधी .... पाकर मैं रुक गया ।

(4) बेटे! .... पी लो, थोड़ा.............. खा लो ।

(5) चलो, तुम लोगों को .... दिखा लाएँ ।

व्याकरण

(क) इन शब्दों से वाक्य बनाओ —

बैलगाड़ी — .... ।

फूल — .... ।

माँ — .... ।

दीवार — .... ।

मसजिद — .... ।

तालाब — .... ।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों से संज्ञा शब्द छाँटकर लिखो —

(1) मिट्टी की दीवारों पर फूस के छप्पर पड़े हुए थे ।

(2) सरसों और मटर के रंग-बिरंगे फूल अति सुन्दर लग रहे थे ।

(3) वहाँ बहुत भीड़ थी । सलीम वहाँ नहीं था ।

(4) तालाब के किनारे एक स्कूल था ।

(ग) करो —

(क) इस पाठ में आए हुए दस संज्ञा शब्दों को चुनकर लिखो ।

(ख) किसी गाँव की सैर का वर्णन अपनी भाषा में करो ।

पाठ - 6

परीक्षा

विद्यालय में जाँच-परीक्षा होनेवाली थी। शिक्षक ने परीक्षा के नियम छात्रों को पहले अच्छी तरह बता दिए। जिस पाठ की परीक्षा थी उसे भी अच्छी तरह समझा दिया। घर पर र करने के लिए भी सबक़ दे दिए।

अगले दिन सभी बच्चे पूरी तरह तैयार होकर स्कूल आए। शिक्षक ने प्रश्न पूछे, चट सबने उनके उत्तर दे दिए।

अब लिखने की परीक्षा होने लगी। सबने पाठ के एक-एक शब्द के हिज्जे ख़ूब ध्यान याद कर लिए थे। शिक्षक ने सभी बच्चों को आगे-पीछे बिठा दिया। बच्चे जानते थे कि परीक्षा एक-दूसरे की नक़ल नहीं की जाती। शिक्षक ने बोलना आरम्भ किया। बच्चे सुनकर लिखने लगे बीच ही में अनवर 'धनुष' शब्द पर आकर अटक गया। उसे याद न रहा कि "धनुष" में अन्ति अक्षर 'स' है या 'ष'। वह सिर उठाकर सोचने लगा। आगे असग़र बैठा था। अनवर की न असग़र की कॉपी पर पड़ी। उसने 'धनुष' को 'ष' से लिखा था। अनवर को भी याद आ गया उसने झट से लिख लिया। फिर सोचने लगा कि यह परीक्षा क्या हुई! मैंने तो असग़र का देखव लिखा है। उसने तुरन्त उस शब्द को काट दिया।

परीक्षा समाप्त हुई। शिक्षक सबकी कॉपियाँ देखने लगे। बच्चों को ख़ूब नम्बर दिए। उ

वर की कॉपी देखी तो बोले : "अनवर! तुमने धनुष ठीक तो लिखा था, काट क्यों दिया? अब तुम्हारे नम्बर कट जाएँगे।"

अनवर ने शिक्षक को पूरी बात बता दी। वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उसकी सच्चाई और नदारी की प्रशंसा की। अनवर को भी पूरे नम्बर दे दिए। अनवर भी प्रसन्न हो गया।

अभ्यास

) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

परीक्षा	= इम्तिहान	पाठ	= सबक़
चटपट	= तुरन्त, फ़ौरन	हिज्जे	= शब्दों के पढ़ने का तरीक़ा, उच्चारण
धनुष	= कमान	अन्तिम	= आख़िरी
समाप्त होना	= ख़त्म होना	प्रसन्न	= ख़ुश

) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो —

(1) बच्चे तैयारी करके स्कूल क्यों आए?

(2) शिक्षक ने किस चीज़ की परीक्षा ली?

(3) शिक्षक ने बच्चों को आगे-पीछे क्यों बिठाया?

(4) अनवर किस शब्द पर आकर रुक गया?

(5) ठीक लिखने के बाद भी अनवर ने 'धनुष' शब्द को क्यों काट दिया?

(6) शिक्षक ने अनवर की क्यों प्रशंसा की?

) इन शब्दों को पाँच-पाँच बार लिखो —

परीक्षा स्कूल शिक्षक प्रश्न उत्तर

हिज्जे	धनुष	प्रशंसा	अन्तिम	अक्षर
समाप्त	कॉपियाँ	प्रसन्न	सच्चाई	ईमानदारी

(घ) विलोम शब्द लिखो –

प्रसन्न – अप्रसन्न

प्रश्न – .... आगे – ....

प्रशंसा – .... समाप्त – ....

ईमानदार – ....

(ङ) मौखिक उत्तर दो –

नक़ल करके लिखने से क्या होता है?

(च) अपने जीवन से सम्बन्धित कोई ईमानदारी की घटना लिखो और कक्षा में सुनाओ।

पाठ - 7
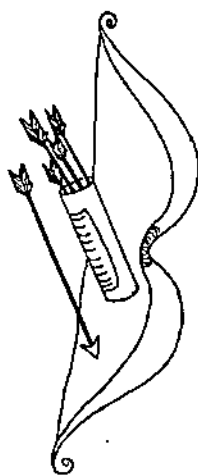
किसान
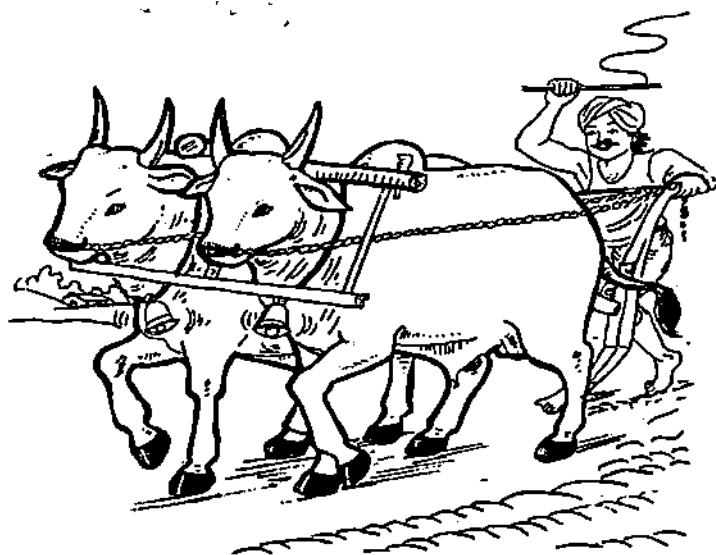
नहीं हुआ है अभी सवेरा
पूरब की लाली पहचान,
चिड़ियों के जगने से पहले
खाट छोड़, उठ गया किसान।

खिला-पिलाकर, बैलों को ले
करने चला खेत पर काम ।
नहीं कभी त्योहार, न छुट्टी
है उसको आराम हराम ।

गरम-गरम लू चलती सन-सन
धरती जलती तवा समान ।
तब भी करता काम खेत पर
बिना किए आराम किसान।

बादल गरज रहे गड़-गड़-गड़
बिजली चमक रही चम-चम ।
मूसलाधार बरसता पानी
ज़रा न रुकता लेता दम ।

हाथ-पाँव ठिठुरे जाते हैं
घर से बाहर निकले कौन?
फिर भी आग जला, खेतों की
रखवाली करता वह मौन ।

है किसान को चैन कहाँ
करता रहता हरदम काम ।
सोचा नहीं कभी भी उसने
घर पर रह करना आराम ।

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

मूसलाधार = तेज़ बारिश

मौन = ख़ामोश, चुप

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो —

(1) किसान कब उठता है?

(2) किसान किसे अपने साथ लेकर काम पर जाता है?

(3) ठंड के मौसम में किसान अपने खेत की रखवाली कैसे करता है?

(4) किसान के लिए आराम हराम क्यों है?

(ग) इन पंक्तियों को पूरा करो —

(1) खिला-पिलाकर, बैलों को ले

.... काम।

(2) है किसान को चैन कहाँ,

करता रहता ....।

(3) सोचा नहीं कभी भी उसने

घर पर ....।

(घ) बताओ वे कौन-सी ऋतुएँ होती हैं, जब —

(1) धरती तवे समान जलती है।

(2) हाथ-पाँव ठिठुरते हैं।

(3) बादल गरजते हैं।

(ङ) उचित जोड़े लगाओ –

(1) धरती	(1) चहकती है।
(2) बैल	(2) चमकती है।
(3) किसान	(3) चलती है।
(4) लू	(4) खेत पर काम करता है।
(5) बिजली	(5) हल खींचता है।
(6) चिड़िया	(6) गर्मी के दिनों में तवे समान जलती है।

व्याकरण

(क) उचित जोड़े लगाओ –

उदाहरण : (1) व्यक्तिवाचक संज्ञा — घी, दही

(2) द्रव्यवाचक संज्ञा — जमील, अजय

उत्तर : (1) व्यक्तिवाचक संज्ञा — जमील, अजय

(2) द्रव्यवाचक संज्ञा — घी, दही

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा	—	सोना, चाँदी, जल, पीतल
(2) जातिवाचक संज्ञा	—	गिरोह, सेना, गुच्छा
(3) समूहवाचक संज्ञा	—	यमुना, हिमालय, कुरआन, अमर, चीन
(4) द्रव्यवाचक संज्ञा	—	सुंदरता, जवानी, लम्बाई, पढ़ाई, फुर्ती, मिठास
(5) भाववाचक संज्ञा	—	किसान, खाट, हाथ, पाँव, बैल

पाठ - 8

साहसी बालक

वह था तो अभी बच्चा, यही कोई बारह-तेरह वर्ष का। छोटा-सा क़द, नन्हें-नन्हें हाथ-पैर, ला-पतला शरीर तथा आँखें आई हुई। परन्तु था बड़ा वीर और साहसी। उसका नाम था अली। प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के चाचा अबू तालिब का बेटा था। प्यारे नबी *(सल्ल०)* साथ उसका रहना-सहना होता था। उनके आचरण से वह बड़ी अच्छी तरह परिचित था। जब रत मुहम्मद *(सल्ल०)* को अल्लाह ने रसूल बनाया तो आपको इस्लाम का सन्देश लोगों तक चाने का आदेश दिया। सन्देश पहुँचाने की प्रक्रिया अपने निकटतम सम्बन्धियों से शुरू होती। अल्लाह की यातना तथा नरक की आग से डराकर उन्हें बुरे कामों से रोकना और अच्छे कामों लिए तैयार करना आपका उद्देश्य था।

इस आदेशानुसार पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद *(सल्ल०)* ने अपने ख़ानदान के लोगों को अपने घर जन पर आमंत्रित किया। वह बच्चा भी खाने में सम्मिलित था। दौड़-दौड़कर खाना लाता और को पानी पिलाता। जब सब लोग खाना खा चुके तो हज़रत मुहम्मद *(सल्ल०)* ने उनको अल्लाह सन्देश सुनाया। आप *(सल्ल०)* ने खोल-खोलकर उन तमाम बातों को बयान किया जिनके लिए ल्लाह ने आपको भेजा था। जीवन बिताने का वह तरीक़ा भी बताया जो अल्लाह ने आपको ाया था। आप *(सल्ल०)* ने कहा कि "अल्लाह ने मुझे यह दायित्व सौंपा है कि मैं लोगों को

अल्लाह की इच्छा बताऊँ और स्वयं भी उसपर चलूँ । अल्लाह की आज्ञा का पालन करने पर इनाम मिलेगा उसकी शुभ-सूचना सुना दूँ । उसकी अवज्ञा के कारण जो दण्ड मिलेगा उससे आपको अवगत करा दूँ ।''

पूरी बात कहने के बाद आप *(सल्ल॰)* ने पूछा : ''इस बड़े काम में कौन मेरा साथ देगा इस अवसर पर खानदान के छोटे-बड़े, जवान-बूढ़े तथा स्त्री-पुरुष सभी उपस्थित थे । आप *(सल्ल॰)* बात सुनकर सब लोगों ने चुप्पी साध ली । इस नेक और बड़े काम में हाथ बटाने का साहस कि ने न किया । यह चुप्पी देखकर वह बच्चा मन ही मन सोचने लगा : ''क्या सत्य का मूल्य इ कम है कि उसकी पुकार सुनकर सब लोगों को साँप सूँघ जाए । हज़रत मुहम्मद *(सल्ल॰)* ने झूठ नहीं बोला, आज इतना बड़ा झूठ क्यों बोलेंगे? उनका जीवन निष्कलंक है । वे कोई बुरा नहीं करते । फिर ये लोग चुप क्यों हैं? सत्य का साथ देने को तैयार क्यों नहीं होते? अरे! माता-पिता भी चुप हैं । तो क्या मैं भी चुप रहूँ । नहीं! कदापि नहीं! मैं तो साथ दूँगा । भले ही आँखें आई हुई हैं, और मैं दुबला-पतला हूँ तो क्या हुआ! मैं अवश्य अच्छे काम में आपका दूँगा । आज हम दो हैं, कल हम संख्या में और भी अधिक हो जाएँगे । फिर हम सब सत्य सन्देश दूसरों तक पहुँचाएँगे ।''

बच्चे से रहा न गया । वह तुरन्त खड़ा हो गया और बोला : ''मैं आपका साथ दूँगा । मार्ग में आपका हाथ बटाऊँगा ।''

सब लोग हैरान होकर उस बच्चे का मुँह ताकते रह गए । वही बालक आगे चलकर योद्धा और विचारक हुआ । वही हुए प्यारे नबी *(सल्ल॰)* के दामाद, हज़रत फ़ातिमा *(रज़ि॰)* के और इस्लामी सल्तनत के चौथे ख़लीफ़ा । अल्लाह उनसे राज़ी हो!

वे सत्य के लिए बड़े ही दयालु थे और असत्य और ज़ुल्म के ख़िलाफ़ उतने ही कठो सत्यमार्ग पर चलते हुए उन्होंने अपने जीवन का बलिदान कर दिया ।

अभ्यास

क) इन शब्दों के अर्थ याद करो –

आचरण	= चरित्र, चाल-चलन	निकटतम	= सबसे नज़दीक
सम्बन्धियों	= रिश्तेदारों	यातना	= दुख, तकलीफ़, पीड़ा
उद्देश्य	= मक़सद	आदेशानुसार	= हुक्म के मुताबिक़
आमंत्रित करना	= बुलाना	दायित्व	= ज़िम्मेदारी
इच्छा	= ख़ाहिश, चाहत	आज्ञा	= हुक्म
शुभ-सूचना	= खुशख़बरी	अवज्ञा	= नाफ़रमानी
अवगत	= आगाह	चुप्पी साध ली	= चुप हो गए
साँप सूँघ जाना	= अवाक् हो जाना	निष्कलंक	= बेदाग़
कदापि	= हरगिज़	विचारक	= सोचनेवाला, विचार करनेवाला
सत्यमार्ग	= सही रास्ता		

ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो –

(1) बचपन में हज़रत अली *(रज़ि॰)* कैसे थे?

(2) हज़रत मुहम्मद *(सल्ल॰)* ने लोगों को क्या बताया?

(3) अल्लाह का सन्देश सुनकर सब तो चुप रहे मगर अली बोलने के लिए क्यों विवश हो गए?

(4) हज़रत अली को पैग़म्बर मुहम्मद *(सल्ल॰)* की बातों पर क्यों विश्वास हो गया ?

ग) करो –

इस्लामी सल्तनत के चार आदर्श ख़लीफ़ा कौन-कौन थे? अपने शिक्षक से पूछकर क्रम से नके नाम बताओ ।

व्याकरण

(क) निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़ो –

(1) अतीक़ अच्छा लड़का है । **वह** सदा सच बोलता है ।

(2) अली ने आप *(सल्ल०)* से कहा, "**मैं** आपका साथ दूँगा ।"

(3) बच्चे क़ुरआन पढ़ते हैं, **वे** क़ुरआन रोज़ याद करते हैं ।

(4) शाहिद ने नदीम से पूछा, "**तुम** कहाँ जा रहे हो?"

ऊपर लिखे हुए वाक्यों में **वह, मैं, वे** और **तुम** शब्दों का प्रयोग क्रमश: अतीक़, ३ बच्चे और नदीम जैसे संज्ञा शब्दों के स्थान पर किया गया है ।

संज्ञाओं के स्थान पर उनके प्रतिनिधि के रूप में जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है **'सर्वनाम'** कहते हैं । जैसे – मैं, तुम, हम, तू, कौन, आप, वह, वे, यह, ये, जो, क्या इत्यादि

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम को अलग करके लिखो –

(1) सलीम अच्छा लड़का है । वह रोज़ स्कूल जाता है ।

(2) मैं रोज़ाना क़ुरआन पढ़ती हूँ ।

(3) तुम स्कूल कब जाते हो?

(4) हज़रत मुहम्मद *(सल्ल०)* अल्लाह के रसूल हैं । आपने कभी झूठ नहीं बोला ।

(ग) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताओ और उन्हें वाक्यों में प्रयोग करो –

साहसी	आचरण	यातना	दायित्व
अवज्ञा	मार्ग	योद्धा	विचारक

(घ) इन मुहावरों के अर्थ बताओ और वाक्यों में प्रयोग करो –

चुप्पी साधना   साँप सूँघ जाना   हाथ-बटाना

पाठ – 9

चिड़ियाघर की सैर

आज स्कूल में काफ़ी चहल-पहल थी । हम सब बहुत खुश थे क्योंकि हमें चिड़ियाघर की र को जाना था । हम लोग स्कूल की बस से ग्यारह बजे चिड़ियाघर पहुँचे । मास्टर साहब ने ःकट ख़रीदे और हम सब उनके साथ चिड़ियाघर के अन्दर चले गए ।

प्रवेश-द्वार के आगे एक छोटा-सा रास्ता था, जिसके दोनों ओर रंग-बिरंगे मनमोहक फूल ख़ले थे । कुछ दूर चलने पर ही पशु-पक्षियों का मनोरंजक और अनोखा संसार आ गया ।

एक लम्बी-सी झील में कलरव करते विभिन्न प्रकार के पक्षियों का झुंड था । उनकी आवाज़ों और चित्ताकर्षक क्रिया-कलापों ने हम सबका मन मोह लिया । कहीं झील में बत्तख़ें तै थीं और डुबकियाँ लगा रही थीं, तो कहीं सारस क्रीड़ा कर रहे थे । कहीं क्रेन पक्षी पंख सुख थे, तो कहीं पनकौवे ग़ोते लगा रहे थे । झील के किनारे बगुले ध्यान लगाए बैठे थे ।

आगे चलकर हम मोर के बाड़े के पास पहुँचे । हमने मोर तो अनेक बार देखे हैं, सफ़ेद मोर हमने पहली बार ही देखा था । मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है । मोर के बाड़े के निक तोते का बड़ा-सा पिंजड़ा था । उसमें बहुत-से ख़ाने बने हुए थे । उन ख़ानों में देश-विदेश रंग-बिरंगे, छोटे-बड़े तोते थे । अफ़्रीक़ी तोते बहुत सुन्दर लग रहे थे । पिंजड़ों में फल, स तथा मिर्चें रखी हुई थीं । कुछ तोते बड़े चाव से मिर्चें खा रहे थे ।

आगे चलकर हमने एक अद्‌भुत पक्षी देखा । उसकी टाँगें लम्बी-लम्बी तथा गर्दन बहुत थी । उसके पंख बड़े-बड़े थे ।

''यह कौन-सा पक्षी है, महाशय?'' शाहिद ने मास्टर जी से पूछा । ''इसे 'शुतुरमुर्ग़' हैं । यह संसार का सबसे बड़ा पक्षी है । यह उड़ तो नहीं सकता, लेकिन घोड़े की तरह तेज़ सकता है । अफ़्रीक़ी लोग इसपर सवारी भी करते हैं ।'' मास्टर जी ने बताया । इसके अति हमने देश-विदेश के और भी बहुत-से छोटे-बड़े पक्षी देखे ।

हम और आगे बढ़े तो एक बाड़े में एक विचित्र जानवर देखा । उसके पेट में एक थै और थैली में एक नन्हा-सा बच्चा था । हमें बड़ा आश्चर्य हुआ । ''महाशय! यह कौन-सा जानवर है जमील ने मास्टर जी से गूछा ।

''यह कंगारू है । यह आस्ट्रेलिया में पाया जाता है । गेहूँ, फल, सब्ज़ियाँ, पत्तियाँ नरम-नरम घास इसका प्रिय भोजन है ।'' मास्टर जी ने बताया । कंगारू के बाड़े के पास

ांजी का बाड़ा था। चिम्पांजी मनुष्य की तरह चल रहा था। मास्टर जी ने बताया कि चिम्पांजी काम आदमियों की तरह कर सकता है। यह अफ़्रीक़ा में पाया जाता है। फल, सब्ज़ी और क इसका प्रिय भोजन है। यह दूध और रोटी भी खाता है।

फिर हम बन्दरों के बाड़े के पास पहुँचे। हमारी ख़ुशी का ठिकाना न रहा। वहाँ तरह-तरह न्दर थे। किसी का मुँह लाल था तो किसी का काला, किसी की पूँछ लम्बी थी तो किसी की ी। कुछ बन्दर उछल-कूद रहे थे, तो कुछ झूला झूल रहे थे। कुछ बन्दर आराम से बैठकर -दूसरे की जूँ निकाल रहे थे। कुछ बन्दरियाँ अपने बच्चों को दूध पिला रही थीं, तो कुछ ने-अपने बच्चों को सीने से चिमटाए पेड़ों पर इधर-उधर कूद रही थीं। बहुत-से बंदर ललचायी ाहों से हमारी ओर देख रहे थे। हमने उनकी ओर मूँगफली, चने और केले फेंके। बन्दरों ने इन ों को मज़े ले-लेकर खाया।

इतने में हमारे कानों में सिंह की दहाड़ सुनाई पड़ी। हम सब घबरा गए। हम लोग सिंह के के पास पहुँचे। सिंह जंगल का राजा कहलाता है। उसकी गर्दन पर बड़े-बड़े बाल थे, जिन्हें याल' कहा जाता है। उसके भयंकर डील-डौल, खूँख़ार पंजों आदि को हम देर तक देखते रहे। हमारा राष्ट्रीय पशु है। इसके बाद हमने चीता, बाघ, तेंदुआ, भालू, हिरण, बारहसिंगा, चीतल, ा, दरियाई घोड़ा, ख़च्चर, ज़ेबरा इत्यादि विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु देखे। फिर भी पूरा ड़ियाघर हम नहीं देख सके, क्योंकि हम थक चुके थे और भूख भी लग रही थी।

मास्टर जी के साथ हमने चिड़ियाघर में ही हरी-हरी घास से भरे पार्क में वुज़ू किया, फिर ा खाया। उसके बाद ज़ुहर की नमाज़ अदा की और स्कूल की बस में सवार होकर वापस आ ।

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

प्रवेश-द्वार = दाख़िल होने का दरवाज़ा

मनोरंजक = दिलचस्प

विभिन्न प्रकार के = तरह-तरह के

चित्ताकर्षक = मन को लुभानेवाला

बाड़ा = मवेशीख़ाना, जानवरों और पक्षियों के रहने की जगह

प्रिय भोजन = मनपसन्द खाना

भयंकर = डरावना

मनमोहक = दिल को मोह लेनेवाला

कलरव = चिड़ियों के खेलने, तैरने की आवा

मधुर = मीठा

क्रीड़ा = खेल

अद्‌भुत = अनोखा

विचित्र = अजीब

अयाल = घोड़े और सिंह आदि की गर्दन के बाल

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो —

(1) संसार के सबसे बड़े पक्षी का क्या नाम है?

(2) किस जानवर के पेट में थैली होती है?

(3) सिंह के गर्दन के बाल को क्या कहते हैं?

(4) जंगल का राजा किस जानवर को कहा जाता है?

(5) बच्चों ने चिड़ियाघर में किस वक़्त की नमाज़ पढ़ी?

(ग) नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ो। पाठ के अनुसार जो वाक्य सही हैं उनके आगे र (✓) का निशान और जो ग़लत हैं, उनके आगे ग़लत (x) का निशान लगाओ

(1) झील के किनारे बगुला गाना गा रहा था।

(2) तोता मिर्च खाता है।

(3) चिड़ियाघर में शुतुरमुर्ग़ उड़ रहा था।

(4) शुतुरमुर्ग़ घोड़े की तरह तेज़ दौड़ सकता है ।

(5) कंगारू आस्ट्रेलिया में पाया जाता है ।

व्याकरण

;) उल्टे शब्द (विलोम) लिखो —

बहुत	अन्दर
आगे	बड़ा
ऊँचा	राजा

ब) नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़ो –

(1) लड़का पढ़ता है ।

(2) लड़के पढ़ते हैं ।

इन वाक्यों में 'लड़का' शब्द का एक वचन में प्रयोग हुआ है और 'लड़के' शब्द का ;वचन में । पहले वाक्य में 'लड़का' शब्द से मालूम होता है कि कोई एक ही लड़का है, लेकिन ;रे वाक्य में 'लड़के' से लगता है कि पढ़नेवाले लड़के कई हैं । हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते —

1. **एकवचन** : जो एक संख्या की जानकारी देता है उसे एकवचन कहते हैं, जैसे — लड़का, गाय, घोड़ा, नदी, घर, भाई इत्यादि ।
2. **बहुवचन** : जो एक से अधिक संख्या का ज्ञान कराता है उसे बहुवचन कहते हैं, जैसे– लड़के, कॉपियाँ, घोड़े, कुर्सियाँ, तारे इत्यादि ।

ा) करो :

इस पाठ में आए दस एकवचन शब्दों को चुनकर अपनी कॉपी में लिखो और उनके बहुवचन बनाओ ।

पाठ-10

आगे बढ़ते जाना

आगे बढ़ते जाना बच्चो, आगे बढ़ते जाना ।
अंधियारों में सच्चाई के दीप जलाते जाना ।
बस्ती-बस्ती ईश्वर का सन्देश सुनाते जाना ।
दुनिया तुझको कहती है तो कहने दो दीवाना ।
आगे बढ़ते जाना बच्चो, आगे बढ़ते जाना ॥

पथ में तेरे दुनिया चाहे कंटक जाल बिछाए ।
तेरे संग ईश्वर है तेरा मन काहे घबराए ।
तेरा जीवन लक्ष्य रहे हर ज़ालिम से टकराना ।
आगे बढ़ते जाना बच्चो, आगे बढ़ते जाना ॥

जो औरों के काम न आए व्यर्थ है उसका जीना ।
अपने सुख की ख़ातिर जिसने सुख औरों का छीना ।
ऐसे जीवित रहने से तो अच्छा है मर जाना ।
आगे बढ़ते जाना बच्चो, आगे बढ़ते जाना ॥

ध्यान रहे मिट जाएगी इक दिन यह दुनिया सारी ।
चाहे कोई जीव-जन्तु हो या कोई नर-नारी ।
मरना तो सबको है फिर मरने से क्या घबराना ।
आगे बढ़ते जाना बच्चो, आगे बढ़ते जाना ॥

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

दीप = चिराग़	कंटक = काँटा	ज़ीवन = ज़िन्दगी
लक्ष्य = मक़सद	जीवित = ज़िन्दा	इक = एक
जीव-जन्तु = जानदार	नर = मर्द	नारी = औरत

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो —

(1) अंधियारों में क्या करना चाहिए?

(2) बस्ती-बस्ती किसका सन्देश सुनाते जाना है?

(3) किसका जीना व्यर्थ है?

(4) मरने से क्यों नहीं घबराना चाहिए?

(ग) इन वाक्यों को पूरा करो —

(1) अंधियारों में सच्चाई के .... जलाते जाना।
बस्ती-बस्ती .... सन्देश सुनाते जाना।

(2) पथ में तेरे दुनिया चाहे .... जाल बिछाए
तेरे संग .... है तेरा मन काहे घबराए।

(घ) उल्टे शब्द (विलोम) लिखो —

आगे, सच्चाई, ज़ालिम, व्यर्थ, सुख, अच्छा, नारी।

(ङ) करो —

इस कविता को याद करो और अपनी कक्षा में सुनाओ।

पाठ -11

प्यारे नबी *(सल्ल०)*

चौदह सौ वर्ष पूर्व सारे संसार में ज़ुल्म और अन्याय का घोर अँधकार छाया हुआ था। उस समय अरब देश की दशा अत्यन्त ख़राब थी। लोग एक ईश्वर को छोड़कर अनेक मनगढ़न्त देवी-देवताओं की पूजा करते और उनसे डरते थे। उनपर भेंट चढ़ाते तथा उन्हीं से सहायता माँगते थे। लूट-मार, मद्यपान, नाच-गाना, जुआ और अन्य दूसरे बुरे कामों के अलावा लड़कियों को धरती में जीवित गाड़ने का आम चलन था। अनाथों और विधवाओं का माल हड़प लेते थे। गुलामों के साथ पशुओं जैसा व्यवहार करते थे। कोई बुराई न थी जो उनमें न पाई जाती थी।
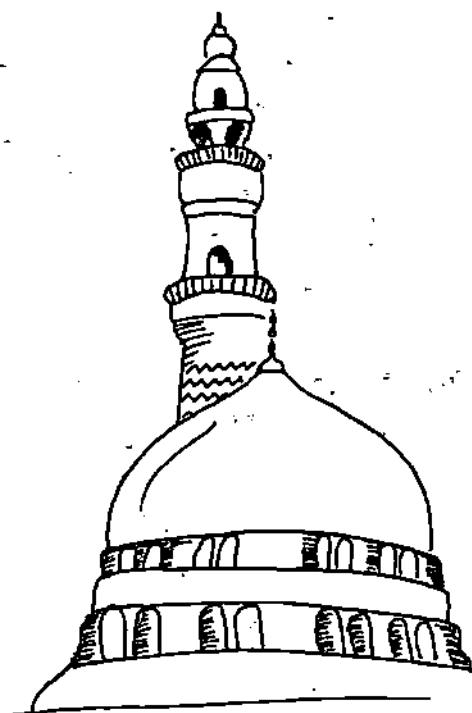
अल्लाह को उनपर दया आई। उसने अपने बन्दों को सीधा मार्ग दिखाने के लिए ह मुहम्मद *(सल्ल०)* को रसूल (ईशदूत) बनाकर भेजा। आप *(सल्ल०)* ने दुनियावालों को अल्लाह सीधा मार्ग दिखाया।

हज़रत मुहम्मद *(सल्ल॰)* अरब के प्रसिद्ध एवं पवित्र नगर मक्का में पैदा हुए । आपके पिता दुल्लाह का देहान्त आपके जन्म से पूर्व ही हो गया था । आप जब छ: वर्ष के हुए तो आपकी ा बीबी आमिना का भी देहान्त हो गया । इसके बाद आपका पालन-पोषण आपके दादा अब्दुल लिब ने किया । किन्तु अभी आप *(सल्ल॰)* आठ वर्ष के ही थे कि आपके दादा भी इस दुनिया से । गए । अब आपके चाचा अबू तालिब आपके अभिभावक बने । उन्होंने पूरी ज़िम्मेदारी और ड-प्यार से आप *(सल्ल॰)* का लालन-पालन किया । अबू तालिब की पत्नी फ़ातिमा बिन्त असद ने रे नबी *(सल्ल॰)* के पालन-पोषण में पूरा-पूरा सहयोग दिया । प्यारे नबी *(सल्ल॰)* ने भी आजीविका ाने में अपने चाचा की सहायता की । मज़दूरी पर बकरियाँ चराने का काम किया । जब आप ल॰) बड़े हुए तो आपने वहाँ के व्यापारियों के साथ व्यापार करना शुरू किया । पच्चीस वर्ष की ु में आपने मक्का की एक विधवा हज़रत ख़दीजा *(रज़ि॰)* से विवाह किया ।

हज़रत ख़दीजा *(रज़ि॰)* अत्यन्त धनवान थीं । वे बहुत ही दानशील महिला थीं । उन्होंने अपना ा धन अनाथों, मुहताजों तथा विधवाओं की देख-रेख एवं इस्लाम की सेवा में लगा दिया । स्त्रियों ाबसे पहले आप ही ईमान लाई थीं । आपने हर सुख-दुख में प्यारे नबी *(सल्ल॰)* का साथ दिया । नबी *(सल्ल॰)* दुष्टों की बातों से दुखी होते तो हज़रत ख़दीजा आपको सांत्वना देतीं ।

प्यारे नबी *(सल्ल॰)* ने सदा सत्य का पालन किया । आपके शत्रुओं ने भी आपकी सत्यनिष्ठा स्वीकार किया । इसी कारण सब आपको 'सादिक़' कहते थे । लोग आपके पास अपने सामान हर के रूप में रखा करते थे । आप *(सल्ल॰)* उनकी धरोहर ज्यों-की-त्यों समय पर लौटा देते । लिए लोग आपको 'अमीन' कहकर पुकारा करते थे । आप *(सल्ल॰)* सदा दीन-दुखियों की सहायता लिए तत्पर रहते थे ।

जब हज़रत मुहम्मद *(सल्ल॰)* की आयु चालीस वर्ष की हो गई तो अल्लाह ने आपको नबी या । आपपर क़ुरआन अवतरित किया । आपने लोगों को अल्लाह का सन्देश सुनाया —

"ऐ लोगो ! अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है । तुम केवल उसी की बन्दगी करे किसी को उसका साझीदार न बनाओ । मैं अल्लाह का रसूल हूँ । मेरे आदेशों का पालन करो । जिस काम से रोकूँ, उससे रुक जाओ और जो मैं करूँ, उसे अंगीकार करो । मृत्यु के पश्चात् ‍ु पुन: जीवित किया जाएगा और तुम लोग अपने रब के सामने उपस्थित किए जाओगे । तुममें प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों का हिसाब देना होगा । उस दिन से डरो, जिस दिन न कोई किसी सहायता कर सकेगा, न सिफ़ारिश । अल्लाह के बन्दों के साथ अच्छा व्यवहार करो । उनके और अधिकार का आदर करो । ऐसा करोगे तो तुम नरक की आग से बच जाओगे और स्वर्ग अधिकारी होगे ।"

प्यारे नबी *(सल्ल०)* का आह्वान सुनकर मक्का के अधिकांश लोगों ने आपका विरोध कि अधर्मी लोग आपके शत्रु हो गए । आप *(सल्ल०)* और आपके साथियों पर अत्याचार करने लगे लेकिन आपके सद्व्यवहार और इस्लाम की शिक्षाओं से प्रभावित होकर भले लोग मान गए ३ इस्लाम पर चलने लगे । अल्लाह ईमान लानेवालों का सहायक हुआ । देखते-देखते सारे अरब इस्लाम का डंका बज गया ।

प्यारे नबी *(सल्ल०)* से पहले दुनिया में बहुत-से नबी आए । आप *(सल्ल०)* अन्तिम नबी हैं आपके बाद अब कोई नबी नहीं आएगा । अत: अब इस्लाम के प्रचार एवं प्रसार की सारी ज़िम्मेद मुसलमानों पर है ।

हम प्रतिज्ञा करते हैं — क़ुरआन पढ़ेंगे, उसपर अमल करेंगे और दुनियावालों तक अल्ल का शुभ सन्देश पहुँचाएँगे ।

"दुरूद हो प्यारे नबी पर,
सलाम हो प्यारे नबी पर ।"

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो –

अत्यन्त = बहुत ही	अनेक = बहुत-से
मद्यपान = शराब पीना	चलन = रिवाज
अनाथ = यतीम	विधवा = बेवा, वह औरत जिसका पति मर गया हो
दानशील = ख़ैरात करनेवाला	सांत्वना = तसल्ली
सत्यनिष्ठा = सच्चाई पर जमे रहना	धरोहर = अमानत
तत्पर = तैयार	पूज्य = पूजने के लायक़
उपस्थित = मौजूद	प्रत्येक = हर एक
आह्वान = पुकार, बुलावा	अधिकांश = ज़्यादातर
विरोध = मुख़ालिफ़त	अधर्मी = काफ़िर
सद्व्यवहार = अच्छा बर्ताव	प्रभावित = मुतास्सिर
प्रचार = तबलीग़	प्रसार = फैलाव
प्रतिज्ञा = क़सम, संकल्प, प्रण	दशा = हालत

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो –

(1) सीधा मार्ग दिखाने के लिए अल्लाह ने किसको भेजा?

(2) प्यारे नबी *(सल्ल०)* ने आजीविका के लिए कौन-से काम किए?

(3) प्यारे नबी *(सल्ल०)* के पास लोग धरोहर क्यों रखते थे?

(4) प्यारे नबी *(सल्ल०)* को 'सादिक़' और 'अमीन' क्यों कहा जाता है?

(5) प्यारे नबी *(सल्ल०)* का व्यवहार कैसा था?

(6) प्यारे नबी *(सल्ल०)* ने अल्लाह का क्या-क्या सन्देश सुनाया?

(ग) इन वाक्यों को पूरा करो –

(1) हज़रत ख़दीजा आपको .... देती।

(2) सब आपको सादिक़ और........................... कहते थे।

(3) किसी को .... न बनाओ।

(4) प्रत्येक व्यक्ति को अपने .... का हिसाब देना होगा।

व्याकरण

(क) एकवचन और बहुवचन को अलग-अलग करके लिखो –

विधवाओं	अनाथों	मुहताज	पशुओं	दुष्ट,
कर्म	स्त्री	दुखियों	व्यक्ति	गुलामों

(ख) इन शब्दों के उलटे शब्द लिखो –

अधर्मी	धनवान	मृत्यु
सुरक्षित	पवित्र	उपस्थित

(ग) इन कामों के करनेवालों के लिए एक शब्द लिखो –

(1) व्यापार करनेवाला – ....

(2) सहायता करनेवाला – ....

(3) सहयोग करनेवाला – ....

(4) मज़दूरी करनेवाला – ....

(5) पालन-पोषण करनेवाला – ....

पाठ – 12

भिड़ का छत्ता

शकील एक नटखट बालक है । शरारत
से खूब सूझती है । वह नित्य नई हरकतें करता
रहता है ।

एक दिन की बात है, बच्चों की एक टोली
के साथ वह कहीं खेलने जा रहा था । रास्ते में एक
दीवार मिली । दीवार में एक छेद था । छेद में भिड़ों
का छत्ता था । शकील को शरारत सूझी । उसने एक
छड़ी लेकर छत्ते को छेड़ दिया । कुछ भिड़ छत्ते से
निकलकर बच्चों पर लपकीं । सब बच्चे भागे ।
शकील भी उनके साथ भागा । भिड़ों ने कुछ दूर तक पीछा किया, फिर वापस लौट आईं । उस दिन
तो सौभाग्य से वे सब बच गए । दूसरे दिन वे सब फिर उसी छत्ते के पास से गुज़रे । सब बच्चे
बच-बचाकर निकलने लगे । शकील बोला : "अरे! तुम सब बड़े कायर हो । भिड़ों से डरते हो ।"
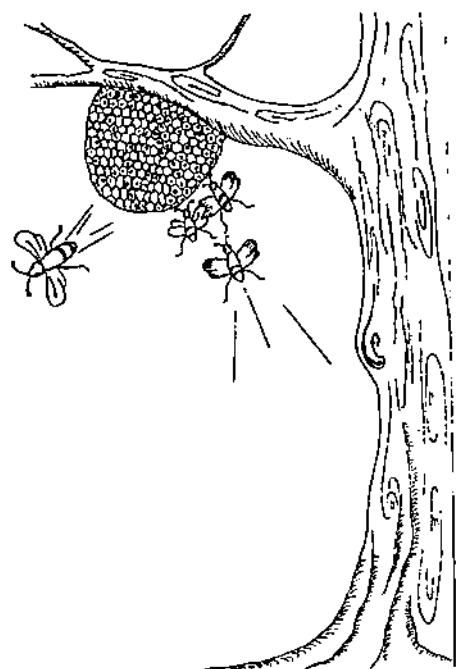
एक बच्चा बोल उठा : "भिड़ों का छत्ता छेड़ना या साँप के बिल में हाथ डालना कहाँ की
वीरता है? यह तो मूर्खता है । वीरता तो खेल के मैदान में या अखाड़े में दिखाई जाती है ।"

शकील की समझ में भला यह बात कब आनेवाली थी । वह तो छत्ते को छेड़ना ३
बहादुरी समझता था । उसने फिर एक लकड़ी ली और छत्ते में डालकर खूब छेड़ा । बाक़ी बच्चे
से खड़े तमाशा देखते रहे । बहुत-सी भिड़ें छत्ते से निकलकर शकील पर टूट पड़ीं । उसके
और सिर पर ख़ूब डंक मारे । शकील रोता-चिल्लाता भागा । कुछ देर बाद उसका चेहरा फू
कुप्पा हो गया । बच्चे चिढ़ाने लगे, "शकील भाई! गालों में कितने लड्डू भर रखे हैं ।"

शकील झेंप गया । अब तो बच्चे उसे चिढ़ाने लगे । वे जब कभी उस दीवार के पा
गुज़रते तो यही कहते : "शकील भाई, ज़रा बहादुरी के करतब दिखाओ ना!"

शकील शर्म से पानी-पानी हो जाता । उस दिन उसे ऐसी शिक्षा मिली कि फिर उसने
भिड़ के छत्ते को न छेड़ा ।

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

नटखट = शरारती

नित्य =रोज़ाना, हर दिन, हमेशा

सौभाग्य = खुशक़िस्मती

कायर = डरपोक

वीरता = बहादुरी

मूर्खता = बेवकूफ़ी

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो —

(1) शकील ने कौन-सी शरारत की?

(2) भिड़ों ने शकील को क्यों डंक मारे?

(3) लड़के उसे क्यों चिढ़ाने लगे?

(4) शकील को इस घटना से क्या शिक्षा मिली?

(ग) इन शब्दों को पाँच-पाँच बार लिखो —

नित्य मूर्खता तमाशा छत्ता बहादुरी शिक्षा सौभाग्य

सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो –

(1) तुम सब बड़े .... हो। (कायर, वीर)

(2) भिड़ों ने .... दूर तक पीछा किया। (कुछ, बहुत)

(3) साँप के बिल में हाथ डालना कहाँ की .... है। (वीरता, मूर्खता)

(4) शकील .... से पानी-पानी हो जाता। (शर्म, खुशी)

व्याकरण

) **निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़ो –**

(1) शकील एक **नटखट बालक** है।   (2) **उजला घोड़ा** खड़ा है।

(3) **काली गाय** चरती है।   (4) यह **आम मीठा** है।

उपर्युक्त वाक्यों में बोल्ड टाइप में छपे शब्दों को ध्यान से देखो। 'नटखट बालक' में दो द हैं, जिसमें 'नटखट' शब्द 'बालक' शब्द की विशेषता बताता है। इसी प्रकार 'उजला घोड़ा' ली गाय' और 'मीठा आम' में क्रमशः उजला शब्द घोड़े की, काली शब्द गाय की और मीठा द आम की विशेषता बताते हैं। इसलिए नटखट, उजला, काली और मीठा शब्द विशेषण हैं।

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताए उसे **विशेषण** कहते हैं।

विशेषण से जिस शब्द की विशेषता प्रकट होती है उसे **'विशेष्य'** कहते हैं। यहाँ बालक, ड़ा, गाय और आम विशेष्य हैं। विशेष्य विशेषता के पहले भी आता है और बाद में भी।

ı) **नीचे लिखे वाक्यों में विशेषण और विशेष्य बताओ –**

	विशेषण	**विशेष्य**
(1) ख़ालिद एक बलवान खिलाड़ी है।	....	....
(2) यह अंगूर खट्टा है।	....	....
(3) लाल फूल खिला है।	....	....
(4) तेज़ धूप निकली है।	....	....

पाठ – 13

एक गीत

सोने रूपे के ये धारे
डूबे इनके लोभी सारे
बचकर रहना तुम हे प्यारे,

दुनिया मायाजाल,
हे प्यारे, दुनिया मायाजाल ।

ईश-प्रेम से मन को भर लें
माता-पिता की सेवा कर लें
पीड़ित जनता के दुख हर लें,

हो जाएँ खुशहाल,
हे प्यारे, दुनिया मायाजाल ।

सत्य धर्म यदि जनता पाए
देश शक्तिशाली बन जाए
जनता का दुख सब कट जाए,

आए फिर न अकाल,

हे प्यारे, दुनिया मायाजाल ।

ईश्वर की हम अनुमति पाएँ

सेवक बनकर राज चलाएँ

नित्य देश को स्वर्ग बनाएँ,

होकर मालामाल,

हे प्यारे, दुनिया मायाजाल ।

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

रूपे = चाँदी

धारे = लहरें

लोभी = लालची

मायाजाल = धोखा, छल, कपट

ईश-प्रेम = अल्लाह की मुहब्बत

पीड़ित = दुखी

शक्तिशाली = ताक़तवर

(ख) इन वाक्यों को पूरा करो —

(1) .... से मन को भर लें

माता-पिता की .... कर लें ।

(2) .... यदि जनता पाए

देश .... बन जाए ।

(3) ईश्वर की हम .... पाएँ

.... बनकर राज चलाएँ ।

(ग) विलोम शब्द लिखो –

खुशहाल ....

शक्तिशाली ....

मालामाल ....

स्वर्ग ....

सत्य ....

(घ) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो –

(1) इस कविता में किस चीज़ के लोभ से मना किया गया है?

(2) हमें किसका प्रेम अपने मन में भर लेना चाहिए?

(3) हमें किसकी सेवा मन से करनी चाहिए?

(4) हमें कौन-सा धर्म अपनाना चाहिए?

(ङ) इन शब्दों को पाँच-पाँच बार लिखो –

ईश-प्रेम माता-पिता सत्य-धर्म शक्तिशाली

(च) करो –

छोटे-छोटे समूह बनाकर इस कविता का पाठ करो।

पाठ – 14

घोड़ा

अल्लाह ने पशुओं को हमारी सेवा के लिए पैदा किया है । इनमें कुछ पालतू होते हैं और छ जंगली । पालतू पशु वास्तव में इंसान के साथी और सेवक होते हैं । पशुओं के विषय में रआन मजीद में है –

"अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए, ताकि उनमें से कुछ पर तुम सवारी करो, और उनमें से कुछ को खाओ ।"

(सूरा : 40 अल-मोमिन : आयत 79)

इसके अतिरिक्त पशुओं से हमें अनेक लाभ हैं । इन्हीं पशुओं में एक पशु घोड़ा भी है । ड़ा बहुत ही आज्ञाकारी पशु है । उसका शरीर गठा हुआ होता है । उसकी कमर पतली, सीना ज़बूत और लम्बी गर्दन पर बड़े-बड़े बाल होते हैं । इन बालों को 'अयाल' कहते हैं । उसकी ाली-काली चमकीली आँखें होती हैं । वह गर्दन उठाकर बड़ी शान से चलता है । चलते समय नौतियाँ बदलता रहता है और कान खड़े रखता है । उसकी दुम पर लम्बे-लम्बे बाल होते हैं नसे वह मक्खियाँ आदि उड़ाता है । उसके पैरों में गोल और कठोर सुम होते हैं । उनमें लोहे के ल जड़ दिए जाते हैं ताकि पक्की सड़कों पर दौड़ने में उसे कष्ट न हो ।

घोड़ा इंसान का बहुत अच्छा मित्र है । वह अपने मालिक का बड़ा वफ़ादार होता है । अपनी

जान की परवाह किए बिना शत्रु की सेना में घुस जाता है ।

घोड़ा विशेष रूप से सवारी और माल ढोने के काम आता है । यह पहाड़ी क्षेत्रों में म
ढोने के लिए अत्यन्त उपयोगी है । घोड़ा बग्घी, इक्का इत्यादि भी खींचता है । इसके मुँह में ल
देकर और पीठ पर ज़ीन कसकर सवारी करते हैं । यह सरकस में लोगों के दिल बहलाने ३
बड़े-बड़े करतब दिखाने के भी काम आता है । सरकस के घोड़े बड़े समझदार और कुशल होते है

घास और भीगे हुए चने आदि घोड़े का मुख्य और प्रिय भोजन हैं । यह हिनहिनाता ३
धरती पर लोटता है । लोटने से इसकी थकान दूर हो जाती है और भोजन शीघ्र पच जाता
घोड़े की चालें कई प्रकार की होती हैं, जैसे — सरपट, दुलकी आदि ।

पालतू घोड़ों के अतिरिक्त जंगली घोड़े भी होते हैं । जंगली घोड़े झुंड में साथ रहते
घोड़े अपने देश के नाम से भी पहचाने और पुकारे जाते हैं, जैसे— तुर्की, ताज़ी, मुलतानी, काबु
काठियावाड़ी आदि । अरब का घोड़ा 'ताज़ी' कहलाता है । यह अच्छी नस्ल का बहुत तेज़ रफ़
और शक्तिशाली माना जाता है । इसकी देख-रेख बड़ी सावधानी से की जाती है ।

डाक-तार की वर्तमान व्यवस्था से पूर्व डाक एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने की से
घोड़े से ही ली जाती थी । शाही दौर में सड़कों के किनारे जगह-जगह डाक चौकियाँ होती थीं ।
चौकियों पर घोड़े तैयार रहते थे । इन्हीं के द्वारा डाक एक चौकी से दूसरी चौकी तक ले जाई ज
थी । इस प्रकार डाक कम समय में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाई जाती थी ।

प्यारे रसूल *(सल्ल॰)* घोड़ों को बहुत पसन्द करते थे । आप बड़े प्यार से उनकी देख-रे
करते और फ़रमाते —

"अल्लाह ने घोड़े के मस्तक में क़ियामत तक के लिए बरकत और भलाई रख दी है ।"

अल्लाह तआला ने क़ुरआन में इसकी वफ़ादारी की क़सम खाई है और इनसान को उस
मुक़ाबले में नाशुक्रा बताया है ।

कुरआन में है –

"क़सम है उन (घोड़ों) की जो फुनकार मारते हुए दौड़ते हैं, फिर (अपनी टापों से) चिंगारियाँ झाड़ते हैं, फिर सुबह-सवेरे छापा मारते हैं, फिर उस अवसर पर गर्द-गुबार उड़ाते हैं, फिर इसी हालत में किसी दल में जा घुसते हैं, वास्तविकता यह है कि इनसान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है।" (कुरआन, 100 : 1-6)

अत: हमें घोड़े की वफ़ादारी से शिक्षा लेनी चाहिए और अपने को अल्लाह का वफ़ादार र आज्ञाकारी बनाना चाहिए।

अभ्यास

क) इन शब्दों के अर्थ याद करो –

वास्तव = सचमुच, हक़ीक़त

अतिरिक्त = अलावा

शत्रु = दुश्मन

विशेष रूप से = ख़ास तौर से

सावधानी = सतर्कता

व्यवस्था = इन्तिज़ाम

शीघ्र = तुरन्त, जल्द

वास्तविकता = सच्चाई

सेवक = ख़िदमत करनेवाला

सुम = घोड़े का खुर, टाप

सेना = फ़ौज

उपयोगी = लाभदायक, फ़ायदेमन्द

वर्तमान = मौजूदा

पूर्व = पहले

मस्तक = पेशानी, ललाट

शिक्षा = तालीम

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो –

(1) घोड़े हमारे किस-किस काम आते हैं?

(2) घोड़े का शरीर कैसा होता है?

(3) सुम किसे कहते हैं?

(4) घोड़े कितने प्रकार के होते हैं? सबसे अच्छी नस्ल के घोड़े को क्या कहते हैं?

(5) घोड़े के द्वारा डाक भेजने की व्यवस्था कैसी होती थी?

(6) घोड़े पर दस वाक्य लिखो।

(ग) सही शब्द चुनकर भरो –

(1) वह गर्दन .... बड़ी शान से चलता है। (उठाकर /झुकाकर)

(2) उनमें .... के नाल जड़ दिए जाते हैं। (पीतल/ लोहे)

(3) घास और भीगे हुए .... घोड़े का प्रिय भोजन है। (दाने, चने)

(4) अरब का घोड़ा .... कहलाता है। (ताज़ी, अरबी)

(घ) करो –

क्या कभी तुमने घोड़े की सवारी की है? यदि हाँ तो उसके बारे में अपने शब्दों में लि और यदि नहीं तो घोड़े की सवारी का आनन्द प्राप्त करो।

व्याकरण

(क) संज्ञा और विशेषण छाँटो –

घोड़े की कमर पतली, सीना मज़बूत और लम्बी गर्दन पर बड़े-बड़े बाल होते हैं।

पाठ – 15

बच्चों से प्यार

बहुत दिनों की बात है । पशुओं के समान मनुष्य भी बिका करते थे । मक्का में एक बार
दुर्जन लोग एक नन्हे बालक को पकड़कर बाज़ार में बेचने ले गए । हकीम बिन हिज़ाम ने उसे
दकर अपनी फूफी बीबी ख़दीजा *(रज़ि०)* की सेवा में भेंट कर दिया । बीबी ख़दीजा *(रज़ि०)* ने उस
क को प्यारे नबी *(सल्ल०)* की सेवा में दे दिया ।

उन दिनों यतीम और गुलाम बच्चों की बड़ी दुर्दशा थी । लोग उनसे कड़ी मेहनत का काम
थे, उन्हें मारा-पीटा भी जाता था और उनके खाने-पीने का कोई उचित प्रबन्ध नहीं था । ऐसे
ल में जब प्यारे नबी *(सल्ल०)* के पास वह बालक आया तो वह बहुत परेशान था । प्यारे नबी
ल०) को उसपर तरस आ गया । उस बालक से उन्हें विशेष प्रेम हो गया क्योंकि माता-पिता से
ड़ जाने के कारण उसका अपना कोई नहीं रह गया था । अब आप *(सल्ल०)* ही उसके अभिभावक
आपके उत्तम व्यवहार और दयालुता से वह बहुत प्रभावित हुआ और शीघ्र ही आपसे हिल-मिल
। वह हर समय आपके साथ रहने लगा ।

उधर उस बालक के पिता बड़ी बेचैनी से उसे ढूँढ रहे थे । कुछ दिनों बाद उन्हें बालक की
ना मिली । वे अपने भाई को साथ लेकर बालक को ढूँढते-ढूँढते आप *(सल्ल०)* के पास पहुँचे । वे
माँगी क़ीमत चुकाकर अपने बेटे को ले जाना चाहते थे । प्यारे नबी *(सल्ल०)* भला उसकी क़ीमत

कैसे लेते! आपने बेझिझक उस बालक को मुक्त कर दिया और बोले : "बेटे! क्या तुम पहचानते हो?"

बालक ने उत्तर दिया : "हाँ, ये हमारे पिता और चाचा हैं।"

प्यारे नबी *(सल्ल॰)* ने कहा : "तुम मुझे भी जानते हो और इन्हें भी। अब यह तुम्हारी इ पर निर्भर है, चाहो तो पिता के साथ जाओ या मेरे पास रहो।"

प्यारे नबी *(सल्ल॰)* ने बालक को बड़े स्नेह से रखा था। अच्छी-अच्छी बातें सिखाई १ इसलिए वह जाने को तैयार न हुआ। उसके पिता ने उसे बहुत समझाया मगर वह न मा- अन्ततः उसके पिता और चाचा वापस चले गए। परन्तु वे बहुत प्रसन्न थे कि उनका बेटा महापुरुष के पास है, जो उसे बहुत प्रेम से रखते हैं। यह वही बालक है जो इतिहास ज़ैद-बिन-हारिसा के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

दुर्जन = बुरे लोग

दुर्दशा = बुरी हालत

उचित = मुनासिब

माहौल = वातावरण, चारों तरफ़ के हालात

विशेष = ख़ास

अभिभावक = सरपरस्त, गार्जियन

प्रभावित = मुतास्सिर

अन्ततः = आख़िरकार

महापुरुष = बड़ा आदमी

प्रसिद्ध = मशहूर

(ख) इन वाक्यों को पूरा करो —

(1) गुलाम बच्चों की बड़ी .... थी।

(2) ये हमारे .... और .... हैं।

(3) उनका बेटा एक .... के पास है।

(4) इतिहास में .... के नाम से .... हुआ।

(ग) बताओ किसने किससे कहा —

(1) "बेटे! क्या तुम इन्हें पहचानते हो?"

(2) "हाँ, ये हमारे पिता और चाचा हैं।"

(घ) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो —

(1) कैसे लोग बालकों को पकड़कर बेच दिया करते थे?

(2) प्यारे नबी *(सल्ल॰)* ने बालक को किस तरह रखा?

(3) बच्चों के लिए प्यारे नबी *(सल्ल॰)* का व्यवहार कैसा था?

(4) बालक के पिता और चाचा उसे क्यों प्यारे नबी *(सल्ल॰)* के पास छोड़ गए?

(5) वह बालक किस नाम से प्रसिद्ध हुआ?

व्याकरण

(क) एकवचन और बहुवचन अलग-अलग कॉलम में लिखो —

	एकवचन	बहुवचन
पशुओं	....	....
बेटा	....	....
भाई	....	....
बालकों	....	....
गुलाम	....	....

(ख) करो —

इस पाठ से दस विशेषण शब्द चुनकर लिखो।

पाठ – 16

सोनेवाले जाग !

एक अनीला भड़कीला-सा देख नया सूरज निकला है,
जिसकी किरणों ने धरती का कोना-कोना गर्म किया है,
एक लगा दी आग, अरे ओ सोनेवाले जाग ।
सोनेवाले जाग, अरे ओ सोनेवाले जाग ॥
वन में पक्षी और पखेरू उड़ने को पर खोल रहे हैं,
चहक-चहक कल्लोल मचाकर कानों में रस घोल रहे हैं,
और अलापें राग, अरे ओ सोनेवाले जाग ।
सोनेवाले जाग, अरे ओ सोनेवाले जाग ॥
गर्द अटा और बिखरा-बिखरा तेरा सब सामान पड़ा है,
लेकिन तू ऐ नींद के मारे ! बेसुध है बेजान पड़ा है,
है तुझको कुछ लाग, अरे ओ सोनेवाले जाग ।
सोनेवाले जाग, अरे ओ सोनेवाले जाग ॥
सारे जग में धूम मची है, कूच नगारा बाज रहा है,
जो बढ़कर प्रबन्ध सँभाले उसी का जग में राज रहा है,
जल्दी कर उठ भाग, अरे ओ सोनेवाले जाग ।
सोनेवाले जाग, अरे ओ सोनेवाले जाग ॥

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो –

वन = जंगल

पक्षी = चिड़िया

पखेरू = पंछी, चिड़िया

कल्लोल = क्रीड़ा, अठखेलियाँ

बेसुध = बेहोश, बेख़बर

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो –

(1) इस कविता में 'सोनेवाले जाग' का क्या अर्थ है ?

(2) किसने धरती के कोने-कोने को गर्म किया है ?

(3) 'एक लगा दी आग' का क्या अर्थ है ?

(4) कानों में रस कौन घोल रहा है?

(5) 'नींद के मारे' किसको कहा गया है ?

(6) जग में किसका राज रहता है ?

(ग) इन वाक्यों को पूरा करो –

(1) वन में पक्षी और पखेरू उड़ने को पर खोल रहे हैं,
चहक-चहक . . . . रहे हैं ।

(2) सारे जग में धूम मची है, कूच नगारा बाज रहा है,
जो बढ़कर . . . . रहा है ।

(घ) इन शब्दों को पाँच-पाँच बार लिखो –

भड़कीला सूरज किरण पक्षी पखेरू बेसुध धूम ।

(ङ) इन शब्दों से वाक्य बनाओ —

धरती : ....

आग : ....

पक्षी : ....

सामान : ....

धूम : ....

भड़कीला : ....

सूरज : ....

पाठ – 17

पिता के नाम पत्र

छात्रावास, दर्सगाह इस्लामी

इस्लाम नगर, रसूलपुरा, दरभंगा (बिहार)

9 मुहर्रम, 1425 हि॰

(1 मार्च, 2004 ई॰)

दरणीय पिता जी,

अस्सलामु अलैकुम व रह्मतुल्लाह!

आशा है कि ईश्वर की कृपा से आप सब लोग सकुशल होंगे। आपका और प्यारी अम्मी स्वास्थ्य भी ठीक होगा। मुन्ना तो अब खूब बातें करने लगा होगा। वह मुझे बहुत याद आता है।

पिता जी! मैं यहाँ बहुत खुश हूँ। आपकी नसीहतों और अम्मी की बातों का पूरा-पूरा पालन ने की कोशिश करता हूँ। नमाज़ पढ़ने, सच बोलने और अच्छे लड़कों के साथ रहने की जो हित आप लोगों ने की थी, उसका सदा ध्यान रखता हूँ।

मैं प्रात: ही उठ जाता हूँ। दर्सगाह के परिसर में ही मसजिद है। मसजिद में फ़ज्र की ज़ पढ़कर वहीं कुरआन मजीद पढ़ता हूँ। फिर नाश्ता करके अपनी कक्षा चला जाता हूँ। वापसी की नमाज़ के समय होती है। नमाज़ पढ़कर खाना खाता हूँ। फिर कुछ देर आराम करता हूँ।

खेल का प्रोग्राम अस्र की नमाज़ के बाद रहता है । रात का खाना यहाँ मग़रिब की नमाज़ के खाया जाता है । इशा की नमाज़ से पहले अध्ययन का सिलसिला रहता है । इशा की नमाज़ प तुरन्त सो जाता हूँ, ताकि प्रात: ठीक समय पर उठ सकूँ ।

मैं अपने पाठ्यक्रम की कुछ पुस्तकें अब तक नहीं ख़रीद सका हूँ, इसलिए पढ़ाई में कठिनाई होती है । आपने जो रुपये भेजे थे वे क़लम, पुस्तकें और कॉपियाँ इत्यादि ख़रीदने में हो गए । अत: आपसे अनुरोध है कि चार सौ रुपये मनी ऑर्डर द्वारा भेज दें ।

अच्छा, अब अनुमति दीजिए । अम्मी, दादी माँ और दादा जी तक मेरा सलाम पहुँचा छोटे मुन्ने को बहुत-बहुत प्यार और दुआएँ । अल्लाह हाफ़िज़ !

आपका प्यारा बे

मुहम्मद अरशद

सेवा में,

Stamp

जनाब मुहम्मद अशरफ़ साहब

10, सुलैमान कॉलोनी

हज़ारीबाग़ (झारखंड)

पिन – 825301

अभ्यास

) इन शब्दों के अर्थ याद करो –

आदरणीय = इज़्ज़तवाले

अस्सलामु अलैकुम व रह्मतुल्लाह = आपपर सलामती हो और अल्लाह की रहमत हो ।

सकुशल = बख़ैर — स्वास्थ्य = तन्दुरुस्ती

दर्सगाह = स्कूल — परिसर = अहाता

अध्ययन = पढ़ाई — पाठ्यक्रम = पढ़ने की तरतीब, सिलेबस

अनुरोध = दरख़्वास्त — अल्लाह हाफ़िज़ = अल्लाह हिफ़ाज़त करे

) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो –

(1) ख़त में सबसे ऊपर दाहिनी ओर क्या लिखते हैं?

(2) अरशद ने यह ख़त कहाँ से और किसे लिखा है?

(3) माता जी ने चलते वक़्त अरशद को क्या नसीहतें की थीं?

(4) फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर अरशद क्या करता है?

(5) अरशद ने किस काम के लिए कितने रुपये मँगवाए?

(6) पत्र के अन्त में क्या लिखते हैं?

) **इस पत्र के आधार पर तुम भी अपने पिता जी को पत्र लिखो जिसमें उनसे स्कूल फ़ीस के लिए 300 रुपये भेजने का निवेदन करो ।**

) ख़ाली जगहें भरो –

(1) प्यारी अम्मी का .... भी ठीक होगा ।

(2) अम्मी की .... का पूरा-पूरा .... करने की कोशिश करता हूँ ।

(3) इशा की नमाज़ से पहले .... का सिलसिला रहता है ।

व्याकरण

(क) निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़ो –

(1) सलीम पुस्तक **पढ़ता है** ।

(2) माँ खाना **बना रही है** ।

(3) रफ़ी **हँसता है** ।

(4) वह सिर **खुजला रहा है** ।

ऊपर के वाक्यों में पढ़ने, खाना बनाने, हँसने और खुजलाने के कार्यों का बोध क्रमशः 'प है', 'बना रही है', 'हँसता है', 'खुजला रहा है' शब्दों से होता है । उन्हें **क्रियाएँ** कहते हैं । प्रकार —

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना प्रकट हो उसे **'क्रिया'** कहते हैं, जै पढ़ना, खाना, चलना, पीना, उठना, बैठना, हँसना, गाना इत्यादि ।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया शब्द चुनकर लिखो —

(1) रफ़ी लिखता है । ....

(2) सना खेल रही है । ....

(3) बच्चा खाता है । ....

(4) वह चाय पी रहा है । ....

(5) लड़कियाँ हँस रही हैं । ....

(ग) विलोम शब्द लिखो —

उदाहरण:	**सकुशल**	**अकुशल**	
झूठ	....	छोटा	....
अच्छा	....	स्वस्थ	....

पाठ - 18

हज़रत इबराहीम (अलैहिस्सलाम)
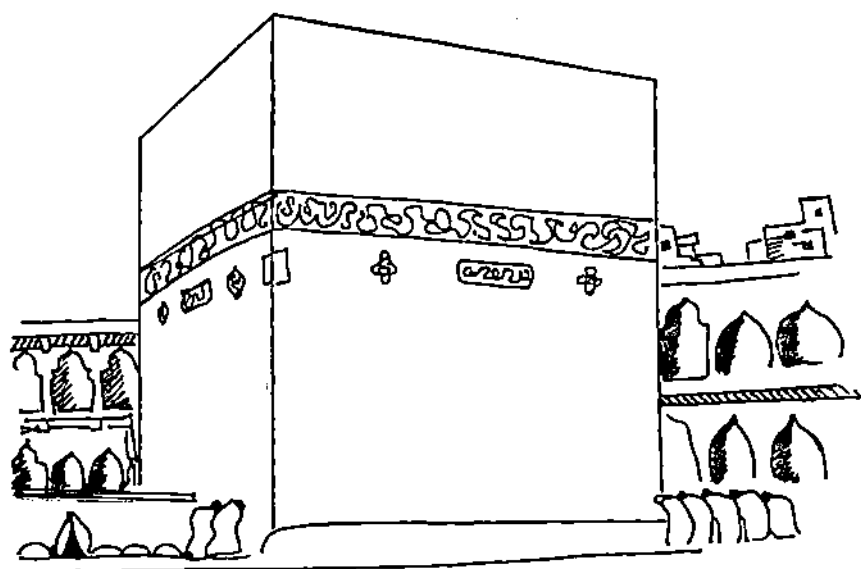
आज से लगभग चार हज़ार वर्ष पूर्व इराक़ के 'उर' नगर में हज़रत इबराहीम ...लैहिस्सलाम) का जन्म हुआ । आप अल्लाह के महान नबी थे । आप पर यहूदी, ईसाई और ...लमान सभी ईमान रखते हैं ।

हज़रत इबराहीम *(अलै.)* के समय के राजा 'नमरूद' की राजधानी 'उर' नगर थी । समाज ... वर्गों में विभाजित था । सर्वश्रेष्ठ वर्ग अमीलू था । इबराहीम *(अलै.)* के पिता आज़र का सम्बन्ध

इसी वर्ग से था । वे सरकारी पुरोहित के पद पर आसीन थे । अत: हज़रत इबराहीम *(अलै.* लालन-पालन बड़े लाड़-प्यार से किया गया था । उस समय लोग एक ख़ुदा को भूले हुए मूर्तिपूजा का आम चलन था । हज़ारों देवी-देवताओं की पूजा होती थी । आपके पिता सर पुरोहित होने के साथ-साथ देवी-देवताओं की प्रतिमा बनाने और बेचने का काम भी करते थे ।

हज़रत इबराहीम *(अलै.)* बचपन में बड़े भोलेपन के साथ अपने पिता से मूर्तियों के विष बौद्धिक प्रश्न करते तो पिता से कोई जवाब न बन पड़ता, अत: वह डाँट देते । परन्तु आप अ ख़ुदाओं की निरर्थकता के बारे में बराबर सोचते रहते ।

जब आप वयस्क व समझदार हुए तो मूर्तिपूजा का विरोध करने लगे । एक दिन पित समझाया : प्रिय पुत्र! मेरे पश्चात् यह धन-दौलत, यह श्रेष्ठ पद और सरकारी सम्मान तुम्हीं के मिलेगा । यदि तुम विरोध करोगे तो इन चीज़ों से हाथ धो बैठोगे । परन्तु आपने पिता की बा मानी । पिता ने दूसरा उपाय यह किया कि आपका विवाह अपने ही ख़ानदान की एक सुन्दर यु से कर दिया, जिसका नाम सारा था, ताकि आप पारिवारिक उलझनों में फँसकर सत्य मार्ग पर च और सच्चा ईश्वरीय सन्देश देना छोड़ दें । परन्तु सारा अपने पति की वफ़ादार निकलीं । उ सत्य मार्ग में अपने पति का आजीवन साथ दिया ।

फिर हज़रत इबराहीम *(अलै.)* ने जनसाधारण को एक अल्लाह की ओर बुलाया । झूठे बनावटी ख़ुदाओं तथा देवी-देवताओं के विरुद्ध अभियान चलाया । बहुदेववाद (शिर्क) का ख किया और बताया कि बन्दगी के योग्य तो केवल वही हस्ती है जिसने मानव तथा समस्त सृष्टि पैदा किया है । एक दिन अवसर पाकर आप पूजा स्थल में घुस गए और सबसे बड़ी मूर्ति छोड़कर समस्त मूर्तियों को खंडित कर दिया और कुल्हाड़ी बड़ी मूर्ति के कंधे पर रख दी । खं मूर्तियाँ देख लोगों ने पूछा : ''ऐ इबराहीम! क्या तूने मूर्तियाँ खंडित की हैं?'' आपने उत्तर दि ''इस हरकत के बारे में इनके बड़े से पूछो अगर वह जवाब दे ।'' तब उन्होंने कहा : ''तुझे

म ही है कि ये मूर्तियाँ बोलती नहीं हैं।'' यह सुनकर इबराहीम (*अलै.*) ने कहा : ''तो क्यों तुम अल्लाह को छोड़कर इन बेजान और असहाय मूर्तियों को पूजते हो जो अपनी रक्षा भी नहीं कर तीं, भला वे तुम्हें लाभ क्या पहुँचा सकेंगी? धिक्कार है तुमपर!'' यह सुनकर सब आपपर क्रुद्ध ाए। उन्होंने राजा से हज़रत इबराहीम (*अलै.*) को कठोर दण्ड देने की माँग की। राजा ने निर्णय कि इबराहीम को आग में जला दिया जाए। फिर क्या था, इबराहीम (*अलै.*) को जलाने के आग का विशाल अलाव तैयार किया गया। लेकिन अल्लाह ने अपनी विशेष युक्ति से आपके आग ठंडी कर दी।

अब आपके लिए 'उर' नगर में रहना सम्भव न रहा। अत: अल्लाह ने आपको हिजरत का श दिया। आप तुरन्त वतन छोड़कर चल दिए। संकट की इस घड़ी में आपके भतीजे हज़रत (*अलै.*) और आपकी पत्नी हज़रत सारा ने आपका साथ दिया। अभी तक आपकी कोई सन्तान ी। आपने अल्लाह से नेक सन्तान की दुआ की।

वतन छोड़कर हज़रत इबराहीम (*अलै.*) पहले उरदुन गए, फिर शाम (सीरिया), फिर स्तीन होते हुए मिस्र पहुँचे। इस यात्रा में आप सब लोगों को अल्लाह का सन्देश पहुँचाते । एक ईश्वर की बन्दगी की ओर बुलाते और परलोक की यातना से डराते रहे। मिस्र का राजा से बहुत प्रभावित हुआ। उसने आपको अनेक उपहार दिए। उस समय की प्रथा के अनुसार । अपने परिवार की हाजरा नामक युवती भी उपहारस्वरूप भेंट की। हज़रत इबराहीम (*अलै.*) ने । शादी कर ली।

अब आपने मिस्र से हिजाज़ की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में कुछ दिन कनआन में ठहरे। हज़रत हाजरा ने हज़रत इसमाईल को जन्म दिया। वृद्धावस्था में सन्तान पाकर आप बहुत न हुए और अल्लाह का शुक्र अदा किया।

हज़रत इबराहीम (*अलै.*) अपने इकलौते पुत्र इसमाईल और हज़रत हाजरा को साथ लेकर

मक्का की ओर चल पड़े जहाँ अब पवित्र घर काबा है। अल्लाह के आदेशानुसार आपने पत्नी बेटे को वहीं बसा दिया और कुछ खाने-पीने की चीज़ें उनके पास रखकर वापस चल दिए।

उस समय मक्का एक सुनसान और पथरीला प्रदेश था। वहाँ न तो कोई चीज़ उगत और न इनसान ही रहते थे। अत: हज़रत हाजरा बहुत परेशान हुईं। परन्तु जब उन्हें बताया कि अल्लाह का यही आदेश है तो वह सन्तुष्ट हो गईं। कुछ दिनों बाद जब भोजन और समाप्त हो गया तो भूख और प्यास ने सताना शुरू कर दिया। बच्चे को तड़पता देख वह व्य हो गईं। घबराई हुई पानी की तलाश में कभी सफ़ा नामक पहाड़ी पर चढ़तीं तो कभी 'मरवा' न पहाड़ी पर। चारों ओर देखतीं कि कोई हो जो दो बूँद पानी दे दे ताकि बच्चे के मुँह में डाल उधर अल्लाह ने फ़रिश्ते को भेजकर पानी का स्रोत जारी करा दिया जिसे बाद में ज़मज़म के से पुकारा गया। हज़रत हाजरा ने बच्चे के मुँह में पानी डाला, ख़ुद पिया और मशकीज़ा भी लिया।

जब हज़रत इसमाईल की आयु तेरह-चौदह वर्ष हो गई तो अल्लाह के इशारे पर ह इबराहीम *(अलै.)* अपने इकलौते बेटे को क़ुरबान करने के लिए तैयार हो गए। परन्तु अल्ला इसमाईल के बदले एक दुंबा क़ुरबान करने का आदेश दिया और फिर इस क़ुरबानी को ह इबराहीम *(अलै.)* की सुन्नत (तरीक़ा) ठहराकर बाद के लोगों में प्रचलित कर दिया। मुसलमान भी उसी तरीक़े पर प्रतिवर्ष ज़िलहिज्जा महीने में क़ुरबानी करते हैं।

हज़रत इबराहीम और हज़रत इसमाईल *(अलै.)* ने मिलकर काबा का निर्माण किया। इस धरती पर अल्लाह की इबादत का वह प्रथम केन्द्र बन गया। अल्लाह ने हज़रत इबराहीम *(अलै.* इनसानों का इमाम बनाया। आपने दुनियावालों को हज के लिए बुलाया। मुसलमान आज भी करने मक्का जाते हैं।

अभ्यास

क) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

महान = बड़ा

पुरोहित = धार्मिक काम करनेवाला, पंडित

आजीवन = ज़िन्दगीभर

सम्मान = इज़्ज़त

युक्ति = तरकीब

केन्द्र = मरकज़

सर्वश्रेष्ठ = सबसे अच्छा

प्रतिमा = बुत, मूरत

बौद्धिक = ज़हनी, विवेकपूर्ण

खंडित = तोड़ना

हिजरत = प्रस्थान

स्रोत = झरना, चश्मा

ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो —

(1) हज़रत इबराहीम *(अलै.)* कौन थे? उन्हें अल्लाह ने किस काम के लिए नियुक्त किया?

(2) हज़रत इबराहीम *(अलै.)* के पिता ने आपका विवाह कम आयु में ही क्यों क़र दिया?

(3) हज़रत इबराहीम *(अलै.)* को आग में डालने का प्रयास क्यों किया गया?

(4) संकट के समय हज़रत इबराहीम *(अलै.)* का साथ किसने दिया?

(5) हज़रत इबराहीम *(अलै.)* ने अपनी पत्नी और बेटे को कहाँ छोड़ा था?

(6) क़ुरबानी की सुन्नत (तरीक़ा) कैसे जारी हुई?

(7) अल्लाह की इबादत का पहला घर कौन-सा है?

(8) हज और क़ुरबानी किसका तरीक़ा है?

) उचित शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो —

(1) आपपर यहूदी, ईसाई और ....सभी ईमान रखते हैं। (हिन्दू / मुसलमान)

(2) आपके पिता सरकारी .... थे। (पुरोहित / कर्मचारी)

(3) हज़रत सारा अपने पति की...............निकलीं।   (वफ़ादार / बेवफ़ा)

(4) हज़रत इबराहीम *(अलै.)* ने जन साधारण को .... ओर बुलाया।

(एक अल्लाह की / अपं

(5) जब अल्लाह का आदेश यही है तो वह ....हो गईं। (सन्तुष्ट / ख़ुश)

व्याकरण

(क) निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़ो और इनमें से संज्ञा, सर्वनाम, विशे और क्रिया चुनकर लिखो –

(1) आमिर अच्छा लड़का है।   (2) उसका छोटा भाई आया है।

(3) आपका कोई मित्र अभी नहीं आया।   (4) ऊँचे पहाड़ों पर बर्फ़ जमी है।

(5) आसमान साफ़ है।   (6) वह पढ़ने में तेज़ है।

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

पाठ - 19

बलवान खिलाड़ी

हे मेरे बलवान खिलाड़ी,
खींचे जा तू अपनी गाड़ी ।
काम जगत् में कुछ तो कर जा,
काम ही करते-करते मर जा,
आख़िर तुझको डर काहे का
जिस रस्ते जा बेखटके जा,
ऊसर-बंजर, जंगल-झाड़ी,
खींचे जा तू अपनी गाड़ी,
हे मेरे बलवान खिलाड़ी ।
पाँव बढ़ाकर पीछे हटना
काम नहीं है यह मर्दों का,
बहता दरिया जैसा बन जा
लाख कठिन हो राह गुज़र जा,
ऊँचा-नीचा, खाई-खाड़ी
खींचे जा तू अपनी गाड़ी,

हे मेरे बलवान खिलाड़ी ।

मंज़िल तक आराम न लेना,

सुस्ताने का नाम न लेना,

मानव-रूपी दानव होंगे

उनका दामन थाम न लेना,

देगी तुझको राह पहाड़ी ,

खींचे जा तू अपनी गाड़ी,

हे मेरे बलवान खिलाड़ी ।

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो –

बलवान = ताक़तवर

बेखटके = बिना डर के

मानव-रूपी = इन्सान की शक्ल में

जगत् = दुनिया

ऊसर-बंजर = वह ज़मीन जो उपजाऊ न

दानव = शैतान

(ख) इन वाक्यों को पूरा करो –

(1) मंज़िल तक आराम न लेना

....

(2) मानव-रूपी दानव होंगे

.... न लेना

(ग) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो –

(1) हमें मरते दम तक क्या करना चाहिए?

(2) मर्दों का क्या काम नहीं है?

(3) हमें किसका दामन नहीं थामना चाहिए?

करो :

इस कविता को याद करो और सब मिलकर गाओ।

पाठ - 20

मानव-शरीर : एक अद्भुत मशीन

मानव-शरीर एक अद्भुत मशीन की तरह है । यह बिना रुके रात-दिन लगातार काम व
रहता है । शरीर के विभिन्न अंग इसके पुर्ज़े की तरह काम करते हैं । जिस प्रकार मशीन ईंध
चलती है उसी प्रकार मानव-शरीर भोजन से प्राप्त ऊर्जा की सहायता से कार्य करता है ।

अल्लाह ने हमारे शरीर की रचना बहुत ही सुन्दर ढंग से की है। शरीर का भार सहने
लिए हड्डियों का एक ढाँचा बनाया है जिसके साथ मांसपेशियाँ जुड़ी हुई हैं । हड्डियों
मांसपेशियों के एक साथ कार्य करने से हम हिलते-डुलते, चलते-फिरते और विभिन्न प्रकार के
करते हैं।

हमारे शरीर में दो प्रकार के अंग हैं । एक तो बाहरी अंग हैं जैसे – आँख, नाक,
इत्यादि । दूसरे आन्तरिक अंग हैं, जिन्हें हम बाहर से नहीं देख सकते हैं । मस्तिष्क, हृदय, फेप
आमाशय, आँतें, जिगर, गुर्दे इत्यादि आन्तरिक अंग हैं । आओ, शरीर के कुछ महत्वपूर्ण आन्त
अंगों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें ।

मस्तिष्क :- मस्तिष्क शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग है । इसी लिए अल्लाह ने इ
शरीर में सबसे ऊपर स्थान दिया है और इस कोमल अंग की सुरक्षा के लिए इसे खोपड़ी के अ
रखा है । मस्तिष्क का काम शरीर के सभी अंगों को नियंत्रित और निर्देशित करना है ।
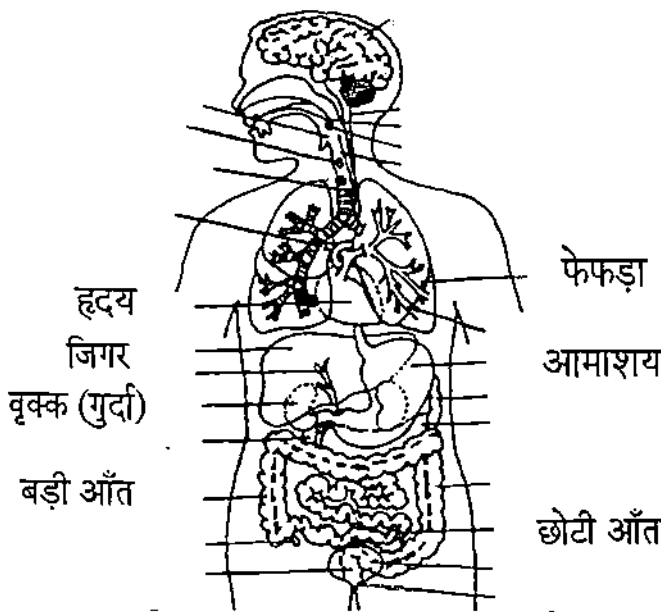
हृदय :- अपनी छाती पर बाईं ओर हाथ रखकर देखो, तुम्हें जिस धड़कन का अनुभव है वह हृदय की है । हृदय मांसपेशियों का बना एक ऐसा अंग है जिसका आकार बन्द मुठ्ठी के र का होता है । हृदय एक पम्प की तरह कार्य करता है । यह धमनिों द्वारा शरीर के हर भाग रक्त पहुँचाता है।

फेफड़े :- साँस द्वारा ली जाने वाली वायु श्वास नली से होकर हमारे फेफड़ों तक पहुँचती फेफड़े इस वायु से ऑक्सीजन सोख लेते हैं । यह ऑक्सीजन रक्त द्वारा शरीर के सभी अंगों पहुँचती है । रक्त की सफ़ाई के बाद बननेवाली कार्बनडाइ आक्साइड गैस को फेफड़े बाहर ल देते हैं ।

आमाशय और आँतें :- आमाशय और छोटी आँत भोजन को पचाने में मुख्य भूमिका ते हैं । जब हम भोजन मुँह में रखकर चबाते हैं तो मुँह में उपस्थित लार खाने को नरम और भ्रम बना देती है जिससे भोजन आसानी से भोजन-नली द्वारा आमाशय में पहुँच जाता है । शय की दीवारों के लगातार फैलते और सिकुड़ते रहने के कारण भोजन अच्छी तरह पिस जाता वास्तव में आमाशय एक चक्की की तरह काम करता है । आमाशय से भोजन छोटी आँत में

पहुँचता है । पचे हुए भोजन का अधिकतर अंश छोटी आँत अपने अन्दर सोख लेती है । बड़ी
पचे हुए भोजन से जल अवशोषित कर लेती है । इस प्रकार पाचन की क्रिया पूर्ण हो जाती
पाचक रसों की सहायता से ठोस भोजन के घुलनशील एवं शरीर के लिए उपयोगी रूप में परि
की क्रिया-पाचन क्रिया कहलाती है ।

वृक्क (गुर्दे) :- शरीर में विभिन्न क्रियाओं के कारण कुछ विषैले पदार्थ भी बनते हैं
दूषित पदार्थ हमारे रक्त में मिल जाते हैं । गुर्दे छलनी की भाँति कार्य करते हैं और रक्त से वि
व हानिकारक पदार्थों को अलग कर देते हैं । आवश्यकतानुसार ये ग्लूकोज़ और दूसरे आवश
तत्वों को सोख लेते हैं तथा कुछ पानी, यूरिया आदि को मूत्र के रूप में बाहर निकाल देते हैं ।

मानव-शरीर का विस्तृत अध्ययन तो तुम विज्ञान की पुस्तकों में भी कर सकते हो, वि
एक बात का ध्यान अवश्य रखो, वह यह कि इस शरीर को चुस्त-दुरुस्त और स्वस्थ रखने के
संतुलित भोजन, उचित व्यायाम, भरपूर नींद और स्वच्छता अति आवश्यक है । जब तक श
स्वस्थ नहीं रहेगा तब तक मस्तिष्क भी स्वस्थ नहीं रहेगा । एक प्रसिद्ध कहावत है कि स्वस्थ श
में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है ।

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

अद्भुत = अनोखा | आन्तरिक = अन्दरूनी | मस्तिष्क = दिमाग़
हृदय = दिल | आमाशय = मेदा | वृक्क = गुर्दा
निर्देश = हिदायत | नियंत्रण = क़ाबू | अनुभव = तजुर्बा
संतुलित भोजन = ऐसा भोजन जिसमें भोजन के सभी आवश्यक तत्व मौजूद हों
श्वास = साँस | उपस्थित = मौजूद | अवशोषित करना= सोखना

पाचक रस = भोजन को पचानेवाला रस　　　घुलनशील = घुल जानेवाला

दूषित = गंदा　　　विस्तृत = तफ़सील　　　विषैला = ज़हरीला, हानिकारक

ग) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो —

(1) शरीर के मुख्य आन्तरिक अंग कौन-कौन से हैं?

(2) हमारे शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग कौन-सा है और उसका क्या काम है?

(3) हृदय और फेफड़े के कार्य लिखो।

(4) पाचन-क्रिया से तुम क्या समझते हो?

(5) गुर्दे छलनी की तरह हैं। कैसे?

(6) शरीर को किस प्रकार स्वस्थ रखा जा सकता है?

(7) पाचन-क्रिया में भाग लेने वाले दो प्रमुख अंगों के नाम बताओ।

) रिक्त स्थानों को भरो —

(शरीर, गुर्दा, अद्भुत मशीन, हृदय, आमशय, मस्तिष्क)

(1) .... एक पम्प की तरह कार्य करता है।

(2) .... भोजन को पीसता है।

(3) रक्त छानने का कार्य .... करता है।

(4) .... शरीर के सभी अंगों को नियंत्रित और निर्देशित करता है।

(5) मानव-शरीर एक .... है।

(6) स्वस्थ .... में स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है।

करो —

मानव-शरीर पर एक संक्षिप्त लेख लिखो।

पाठ – 21
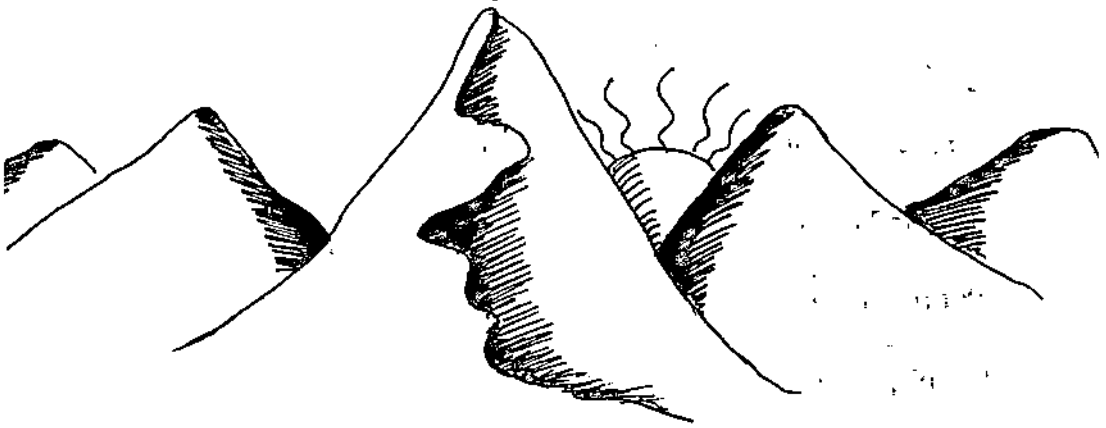
हिमालय

भारत के उत्तर में एक विशाल पर्वत है । उसका नाम हिमालय है । हिमालय का अर्थ है 'बर्फ़ का घर' । यह संसार का सबसे ऊँचा पर्वत है । इसकी चोटियाँ बर्फ़ से ढकी रहती इसकी सबसे ऊँची चोटी का नाम 'माउंट एवरेस्ट' है । हिमालय से हमारे देश को बहुत लाभ है । यह हमारे देश की उत्तरी सीमा की रक्षा करता है । इसकी तराई में घने जंगल और मनोहर स्थल हैं । जंगल से फल, जड़ी-बूटियाँ और बहुमूल्य लकड़ियाँ प्राप्त होती हैं । बहुत-सी नदियाँ निकलती हैं । इनमें गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र आदि प्रमुख हैं । इन नदियों में ह पानी रहता है । पानी से खेतों की सिंचाई, मछलीपालन करने आदि का काम लिया जाता है ।

नदियों द्वारा बहाकर लाई गई मिट्टी काफ़ी उपजाऊ होती है । यही कारण है कि उत्तर के मैदानी इलाक़ों में काफ़ी उपज होती है । हर प्रकार की फ़सलें बोई जाती हैं । यहाँ भारी में अन्न उपजाया जाता है ।

हिमालय की तराई के जंगलों में तरह-तरह के पशु-पक्षी रहते हैं । उनमें शेर, चीता, भालू, हिरण, मोर आदि प्रमुख हैं । हिमालय के आस-पास के प्राकृतिक दृश्य बहुत मनमोहक हैं । ाल, मसूरी, शिमला, दार्जिलिंग इत्यादि प्रमुख पर्यटन स्थल हैं । संसार की प्रसिद्ध मानसरोवर भी इसी पर्वत पर स्थित है । उन्हें देखने के लिए देश-विदेश से पर्यटक आते हैं । इससे देश ार्थिक लाभ भी होता है ।

हिमालय अपनी सुन्दरता और प्राकृतिक सम्पदा से ही परिपूर्ण नहीं है, बल्कि देश के मौसमों ो इसका प्रभाव पड़ता है । समुद्र की ओर से चलनेवाली मानसूनी हवाएँ अपने साथ बड़ी मात्रा प उड़ाकर ले जाती हैं । ये हवाएँ जब हिमालय से टकराकर पलटती हैं तो उससे मैदानी भागों ा होती है । प्राचीन काल में जब नहरों और नालों से खेतों की सिंचाई नहीं होती थी, तब यही सिंचाई का प्रधान साधन थी । आज भी वर्षा हमारी खेती के लिए एक वरदान सिद्ध होती है ।

ईश्वर की कैसी असीम कृपा है हम पर जिसने पर्वतराज हिमालय को हमारी सेवा में लगा है । हिमालय हमारे देश के गौरव को बढ़ाता है इसी लिए इसे 'भारत का मुकुट' भी कहा है ।

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो –

विशाल = बड़ा

पर्वत = पहाड़

तराई = पहाड़ों की तलहटी का भाग

शांत = मौन, चुप

मनोहर = सुन्दर, लुभावना

स्थल = जगह

बहुमूल्य = बेशक़ीमत

प्राकृतिक = क़ुदरती

दृश्य = मंज़र, नज़ारा

पर्यटन-स्थल = सैर करने की जगह

पर्यटक = सैर करनेवाले

आर्थिक = धन-सम्बन्धी

परिपूर्ण = पूरी तरह

प्रभाव = असर

प्रधान = ख़ास

साधन = ज़रिया

सम्पदा = धन-दौलत

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो –

(1) हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी का नाम क्या है?

(2) हिमालय से निकलनेवाली मुख्य नदियों के नाम लिखो? इन नदियों के पानी-किस-1 काम आते हैं?

(3) प्रमुख पर्यटन स्थलों के नाम लिखो?

(4) देश-विदेश से पर्यटक यहाँ क्यों आते हैं?

(5) वर्षा होने में हिमालय पर्वत कैसे मददगार सिद्ध होता है?

(6) हिमालय को 'भारत का मुकुट' क्यों कहते हैं?

(ग) इन शब्दों को पाँच-पाँच बार लिखो –

माउंट एवरेस्ट	ब्रह्मपुत्र	नैनीताल	दार्जिलिंग
प्राकृतिक	पर्वतराज	नौरव	मुकुट

(घ) करो

नक़्शे में देखो —

नदी : गंगा यमुना ब्रह्मपुत्र

चोटी : माउंट एवरेस्ट

व्याकरण

(क) संज्ञा, सर्वनाम छाँटो —

भारत पर्वत उसका हिमालय माउंट

मैं एवरेस्ट इस

संज्ञा	सर्वनाम
....	....
....	....
....	....
....	....

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया शब्द छाँटकर लिखो —

(1) उसका नाम करीम है। ....

(2) ठंडी-ठंडी हवा चल रही है। ....

(3) लड़का बुद्धिमान है। ....

(4) मैं उन्हें खिला रहा हूँ। ....

(5) कबूतर उड़ गया। ....

(6) इधर आओ, उधर जाओ। ....

पाठ – 22

माँ का आशीर्वाद

आँखों का तारा, दिल का सहारा,
भाई का बाज़ू, बहनों का प्यारा,
नन्हीं-सी मूरत, भोली-सी सूरत,
क्या प्यारा-प्यारा, क्या भोला-भाला ।

दौड़ा करे तू, बातें करे तू,
फूले-फले तू, हो स्वास्थ्य अच्छा,
दिन-रात सुख हो, तुझको न दुख हो,
साया सदा हो, तुझपर ख़ुदा का ।

वह दिन भी आए जब सीख-पढ़कर,
सबको सुनाए सन्देश रब का,
हों तुझको प्यारे हज़रत मुहम्मद
आदेश माने तू ईश्वर का ।

हो जग का स्वामी प्रसन्न तुझसे,
अनुचर बने तू प्यारे नबी का,
सत् पर चले तू कटकर असत् से,
ऊँचा करे तू कलिमा ख़ुदा का ।

माँ की विनय है हे जग के स्वामी!
हो इसको केवल तेरा सहारा ।

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो –

बाज़ू = बाँह — नन्हीं = छोटी

अनुचर = अनुयायी, पीछे चलनेवाला — असत् = बातिल, झूठ

कलिमा = ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर-रसूलुल्लाह — विनय = आजिज़ी, प्रार्थना

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो –

(1) माँ की दुआ क्या है?

(2) जग का स्वामी कैसे प्रसन्न होता है?

(3) ख़ुदा का कलिमा क्या है?

(ग) इन पंक्तियों को पूरा करो –

(1) .... का बाज़ू, ... का प्यारा।

(2) दिन-रात .... हो, तुझको न .... हो।

(3) ऊँचा करे तू .... ख़ुदा का।

व्याकरण

(क) विलोम शब्द लिखो –

असत् ....

दुख ....

प्रसन्न ....

ऊँचा ....

स्वामी ....

पाठ – 23

न्याय

एक बार किसी बादशाह के दरबार में एक व्यापारी उपस्थित हुआ और निवेदन
''महाराज मैं दुहाई देता हूँ, मेरी फ़रियाद सुनिए और न्याय कीजिए ।''

बादशाह ने कहा, ''सुनाओ, तुम्हारे साथ अवश्य न्याय किया जाएगा ।''
व्यापारी बोला, ''जब मैं यात्रा पर जाने लगा तो मैंने नगर के क़ाज़ी जी के पास एक थैली धरं
रूप में रखवा दी थी । उस थैली में सोने की हज़ार अशरफ़ियाँ थीं जो मैंने गिनकर रखी थीं
से लौटने पर मैंने क़ाज़ी जी से अपनी थैली माँगी । क़ाज़ी जी ने मेरी थैली लौटा दी । घर
मैंने थैली खोली तो उसमें अशरफ़ियों की जगह चाँदी के सिक्के निकले । हाँ! थैली उसी प्रक
थी और मैंने जो मुहर थैली के मुँह पर लगा दी थी वह भी ज्यों की त्यों थी । मुझे विश्वास
यह धूर्तता क़ाज़ी जी की है । मैं उनके पास गया । प्रार्थना की, हाथ जोड़े कि मेरी अशरफ़ियं
दें । परन्तु उन्होंने मेरी एक न सुनी, उल्टे मुझे डाँटा-फटकारा ।''

बादशाह ने यह सुनकर कहा, ''विश्वास रखो, यदि तुम सच्चे हो तो तुम्हारी पूरी एक
अशरफ़ियाँ तुम्हें मिल जाएँगी । अब घर जाओ, तुम्हें फिर बुलाया जाएगा ।''

उसके जाने के बाद बादशाह देर तक सोचता रहा कि इस चोरी का पता कैसे लगाया
सोचते-सोचते उसे एक उपाय सूझा । उसने तोशाख़ाने के दारोग़ा को बुलाकर कहा, ''ए

ा मेरे लिए सन्दूक़ से निकालकर लाओ और उसके साथ एक बढ़िया पगड़ी भी लेते आना। पगड़ी ऐसी हो कि तोशाख़ाने में वैसी दूसरी न हो।'' जोड़ा आने पर बादशाह ने दारोग़ा को ो देर के लिए बाहर भेज दिया। उसके बाहर जाते ही उसने पगड़ी के बीच में एक स्थान पर ा-सा काटने के बाद उसे सँभाल कर रख दिया।

दारोग़ा लौटा तो बादशाह ने कहा, ''देखो! यह जोड़ा आज तो रख दो, कल पहनेंगे।''

वह सावधानीपूर्वक जोड़ा उठाकर सन्दूक़ में रखने चला गया। रखते समय निरीक्षण करने उसे ज्ञात हुआ कि पगड़ी बीच में एक स्थान पर फटी हुई है। दारोग़ा बहुत घबराया। उसने ा कि इसे किसी अच्छे रफ़ूगर के पास ले जाकर रफ़ू कराया जाए अन्यथा बादशाह कठोर दण्ड । उसने पगड़ी छिपाकर बग़ल में रख ली और रफ़ूगर के पास जा पहुँचा। रफ़ूगर से बोला, ाई! इस पगड़ी को ऐसा रफ़ू कर दो कि जोड़ दिखाई न दे।''

रफ़ूगर ने कहा, ''महाशय! बढ़िया काम की मज़दूरी भी बढ़िया होती है। यदि आप मुझे छी मज़दूरी देंगे तो ऐसा रफ़ू कर दूँगा कि देखने से भी जोड़ का पता नहीं चलेगा।''

जब उसने वचन दिया कि हम तुम्हें मुँहमाँगी मज़दूरी देंगे तो वास्तव में रफ़ूगर ने कमाल कर ाया। ऐसा रफ़ू किया कि ग़ौर से देखने पर भी पता न चलता था कि इसमें कोई जोड़ है। ग़ा ने मज़दूरी के अतिरिक्त बहुत-सा पुरस्कार भी दिया और ख़ुशी-ख़ुशी घर लौट आया।

दूसरे दिन बादशाह ने वही जोड़ा और पगड़ी माँगी। जब जोड़ा आया तो बादशाह ने देखा पगड़ी ठीक है। पूछा, ''यह पगड़ी किसने रफ़ू की है? सच-सच बताओ।'' दारोग़ा ने रफ़ूगर नाम बता दिया। बादशाह ने उसे बुलवाया। रफ़ूगर आया तो बादशाह ने उससे कहा, '' तुम बहुत अच्छे कारीगर हो। हम तुमसे कुछ पूछना चाहते हैं। यदि सच कहोगे तो पुरस्कार दिया एगा अन्यथा कठोर दण्ड मिलेगा।''

बादशाह ने पूछा, '' बताओ कि तुमने इस नगर में कुछ दिन पहले किसी की थैली रफ़ू की

थी? वह थैली जिसमें सिक्के या अशरफ़ियाँ रखते हैं?''

रफ़ूगर ने कहा, "जी हाँ । क़ाज़ी जी ने मुझे एक थैली रफ़ू करने के लिए दी थी उसका जोड़ इस प्रकार रफ़ू किया था कि देखने से भी पता न चलता था कि उसमें जोड़ है मुझे क़ाज़ी जी ने बहुत सारा पुरस्कार भी दिया था ।''

बादशाह ने वही थैली मँगवाकर रफ़ूगर को दिखाई तो रफ़ूगर ने पहचान लिया और "जी हाँ, जी हाँ, यह वही थैली है ।''

बादशाह ने कहा, "अच्छा तुम ठहरो । मैं क़ाज़ी को यहाँ बुलवाता हूँ ।'' जब क़ाज़ आ गए तो बादशाह ने रफ़ूगर से कहा, "अपना बयान इनके सामने दो । तुम इस थैली के ब क्या जानते हो?''

रफ़ूगर ने कहा, "क़ाज़ी जी ने पिछले महीने चाँदी के सिक्कों से भरी यह थैली मुझे दी थी और कहा था कि किसी नौकर की मूर्खता से यह ऊपर से गिरकर फट गई है । यह एक व्यक्ति की धरोहर है इसलिए अच्छा रफ़ू होना चाहिए ।'' जब मैंने बारीक रफ़ू किया तो जी बहुत प्रसन्न हुए । मुझे मज़दूरी भी दी और पुरस्कार भी ।

तब बादशाह ने क़ाज़ी से कहा, "अब आप एक हज़ार अशरफियाँ जल्द से जल दीजिए जो आपने घरोहर में से डकार ली हैं । आपके सम्मुख सच्चाई प्रकट हो गई है । ज अभी अशरफ़ियाँ लेकर आइए ।''

क़ाज़ी जी के साथ एक सिपाही उनके घर भेजा गया और उन्होंने फ़ौरन एक ह अशरफ़ियाँ गिनकर दे दीं । इस प्रकार बादशाह ने अशरफ़ियाँ व्यापारी को दिला दीं और क़ाज़ विरुद्ध निर्णय दिया कि "इस बेईमान को दरिया में फेंक दिया जाए क्योंकि यह अमीन नहीं है, अमानत में ख़ियानत करता है ।''

जब क़ाज़ी को दरिया में फेंका जाने लगा तो वह बहुत गिड़गिड़ाया, तौबा करने लगा, प

क्या होना था । उसे दरिया में फेंक दिया गया । वह तैरना नहीं जानता था । कई डुबकियाँ ए और बहुत-सा पानी पीकर मर गया ।

बादशाह एक मनुष्य था । क़ाज़ी की चोरी की बात वह बिना उपाय नहीं जान सकता था ।] अल्लाह सर्वज्ञ है, सर्वव्यापी है । वह खुली और छिपी हर बात को जानता है । जिस दिन ाह न्याय के लिए बैठेगा और लोगों को उनके किए हुए कर्मों का फल देगा, उस दिन उसकी ड़ से कोई न बच सकेगा । बुद्धिमान हैं वे लोग जो जीवन में प्रत्येक कार्य करने से पहले न्याय ;स दिन को याद कर लेते हैं ।

अभ्यास

) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

व्यापारी = ताजिर, तिजारत करनेवाला

फ़रियाद = न्याय की माँग

धरोहर = अमानत

विश्वास = यक़ीन

तोशाखाना = कपड़े रखने का कमरा

निरीक्षण = मुआइना

कठोर = सख़्त

वचन देना = पक्का वादा करना

निर्णय = फ़ैसला

सर्वज्ञ = सब कुछ जाननेवाला

सावधानीपूर्वक = ध्यान से

निवेदन = दरख़ास्त

यात्रा = सफ़र

अशरफ़ी = सोने का सिक्का

धूर्तता = धोखा करना

सावधानीपूर्वक = ध्यान से

रफ़ूगर = कपड़े रफ़ू करनेवाला

दण्ड = सज़ा

विरुद्ध = ख़िलाफ़

तौबा = पलटना, बुराई करने के बाद उसे फिर न करने की प्रतिज्ञा

(ख) नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दो –

(1) व्यापारी ने अपनी धरोहर यात्रा पर जाने से पहले किसके सुपुर्द की?

(2) थैली में कितनी अशरफ़ियाँ थीं?

(3) व्यापारी ने न्याय के लिए किससे फ़रियाद की?

(4) बादशाह ने पगड़ी क्यों काटी?

(5) रफ़ूगर को क्यों मुँहमाँगी मज़दूरी मिली?

(6) रफ़ूगर ने क़ाज़ी के सामने क्या बयान दिया?

(7) बादशाह ने न्याय किस प्रकार किया?

(8) अशरफ़ियाँ उसके मालिक को कैसे वापस मिलीं?

(9) काज़ी को बेईमानी की क्या सज़ा मिली?

(10) हमें इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो –

जब .... को दरिया में फेंका जाने लगा तो वह बहुत ....
.............करने लगा, परन्तु अब क्या होना था। वह ....
जानता था। कई .... लेकर और बहुत-सा
..................................पीकर .... गया।

व्याकरण

(क) नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़ो –

(1) लड़का पढ़ रहा है।

(2) मजीद आ रहा है।

(3) तुम्हारे साथ अवश्य न्याय किया जाएगा ।

(4) लड़की पढ़ रही है ।

(5) मेरी फ़रियाद सुनिए ।

(6) उसने मेरी थैली लौटा दी ।

ऊपर के वाक्यों में **लड़का**, **मजीद**, **न्याय**, **लड़की**, **फ़रियाद** और **थैली** संज्ञाएँ हैं । में लड़का, मजीद और न्याय पुरुष वर्ग की संज्ञाएँ हैं । ऐसी संज्ञाओं को **पुल्लिग संज्ञाएँ** ह्ते हैं । लड़की, फ़रियाद और थैली स्त्री वर्ग की संज्ञाएँ हैं । ऐसी संज्ञाओं को **स्त्रीलिंग संज्ञाएँ** ह्ते हैं । लिंग का अर्थ है चिह्न । चिह्न से संज्ञा की पहचान होती है कि वह पुरुष जाति की है या । जाति की ।

ब) नीचे लिखे वाक्यों में स्त्रीलिंग और पुल्लिंग छाँटिए –

	स्त्रीलिंग	पुल्लिग
(1) दादा क़ुरआन पढ़ रहे हैं ।	....	....
(2) गाय घास खाती है ।	....	....
(3) यह उसका थैला है ।	....	....
(4) बकरी दूध देती है ।	....	....
(5) लड़का खेल रहा है ।	....	....

ा) इन शब्दों के विलोम लिखो –

पुरस्कार	....	मूर्खता	....
प्रसन्न	....	न्याय	....
कठोर	....		

पाठ – 24
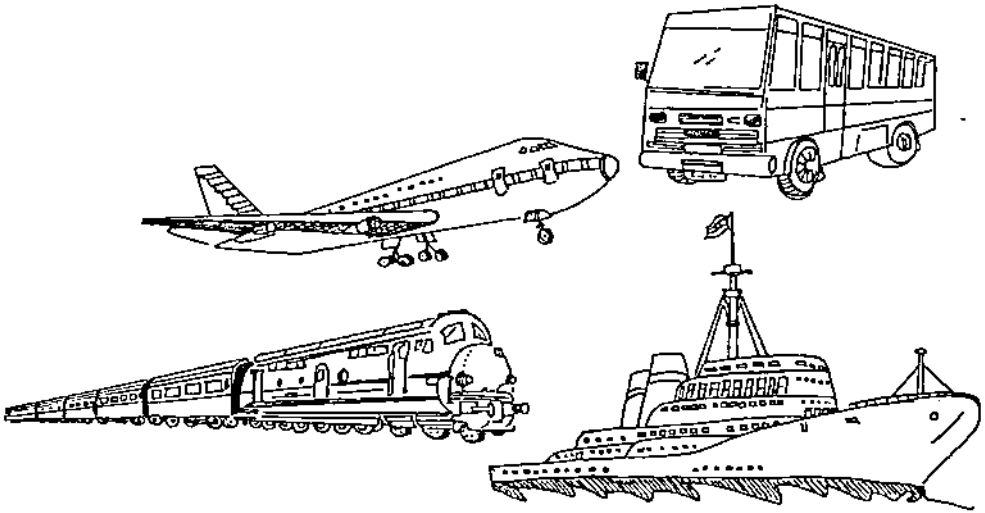
यातायात के साधन

यातायात की समस्या मानव के सामने सदा से रही है। मानव उसे अपनी सुविधानुसार स
बनाता रहा है। मानव पहले पैदल चलकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता था। फिर सवारी
लिए पशुओं को प्रयोग में लाया गया। फिर मानव ने पहिये की गाड़ियाँ बनाईं। उन गाड़ियों
पशुओं को प्रयोग किया। इस प्रकार साधनों में प्रगति होती रही। धीरे-धीरे दो, तीन फिर
पहियोंवाली गाड़ियों का आविष्कार हुआ। अब तो आकाश में उड़नेवाले हवाई जहाज़ भी बन गए
और चाँद पर जाने के लिए रॉकेट का प्रयोग होने लगा है।

नदियों में यात्रा करने के लिए उसने नाव बनाई। उसे हवा के रुख़ पर तेज़ चलाने के लि
उसमें पाल बाँधे। उसपर सवारियाँ और माल लादकर एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाया। नदि

ाट पर बसे नगरों के बीच जलमार्ग से आवागमन की सुविधा हो गई ।

नावों के आधार पर पानी के बड़े-बड़े जहाज़ बनाए गए । उनके द्वारा उसने समुद्रों और सागरों को पार किया । मानव ने समुद्र पार कर के दूसरे देशों से सम्पर्क स्थापित किए । ाम्बस ने इसी पानी के जहाज़ से नई दुनिया 'अमेरिका' को खोज निकाला ।

बाद में कोयला और पानी से भाप तैयार की गई । पानी के जहाज़ भाप से चलाए जाने लगे । से समुद्री यात्रा की कठिनाई कम हुई ।

भाप से जहाज़ चलाने के लिए भाप का इंजन बना । फिर रेलगाड़ियाँ बनाई गईं । उसमें रियों को बिठाने के लिए डिब्बे जोड़े गए । इस साधन को और उपयोगी बनाने के लिए लोहे पटरियाँ बिछाई गईं । इससे यात्रियों को यात्रा करने में सुविधा हुई । लोगों का आवागमन बढ़ा । ाड़ियों से भारी सामान और क्षेत्रीय पैदावार का स्थानान्तरण होने लगा । इस यातायात से दिन देन व्यापार में प्रगति होने लगी ।

आगे चलकर रेल के इंजनों में बहुत सुधार हुआ । इससे उसकी गति और बढ़ी । आज यह न-जाति के लिए सबसे सुलभ और लाभदायक सवारी बन गई है । हमारे भारतवर्ष में रेल मार्गों जाल बिछा हुआ है । अब बिजली से चलनेवाली रेलगाड़ियाँ भी बना ली गई हैं । इनकी गति । तेज़ होती है ।

पेट्रोल की खोज से यातायात के साधनों में क्रान्ति आ गई । तेज़ रफ़्तार गाड़ियों में इसका ोग होने लगा । हवाई जहाज़ इससे चलाए जाने लगे । इससे समय की काफ़ी बचत होने लगी । नों की यात्रा घंटों में पूरी की जाने लगी । पैदल अपनी यात्रा शुरू करनेवाला मनुष्य आकाश में । लगा, समुद्र के सीने चीरने लगा और धरती पर तीव्र गति से दौड़ने लगा । अल्लाह ने मनुष्य जो अद्‌भुत बुद्धि प्रदान की है, उसके बल पर वह यातायात के बहुत-से साधनों का आविष्कार निर्माण कर रहा है और भविष्य में भी करता रहेगा ।

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

समस्या = कठिनाई, मसला

सरल = आसान

आविष्कार = ईजाद

आवागमन = आना-जाना

महासागर = बड़े समुद्र

सम्पर्क = ताल्लुक़, सम्बन्ध

यात्री = मुसाफ़िर

प्रगति = बढ़ोत्तरी, विकास

सुलभ = आसानी से प्राप्त

क्रान्ति = तब्दीली, परिवर्तन

तीव्र = तेज़

निर्माण = बनाना, रचना

भविष्य = आनेवाला वक़्त, आनेवाला कल

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो —

(1) किस गाड़ी में पशु-प्रयोग किए गए ?

(2) नई दुनिया की खोज किस साधन से हुई ?

(3) लोहे की पटरियाँ किस सवारी के लिए प्रयोग होती हैं ?

(4) सबसे तेज़ रफ़्तार साधन कौन-सा है ?

(5) यातायात के साधनों में क्रान्ति किस प्रकार आई ?

(6) अल्लाह की दी हुई बुद्धि से काम लेकर मनुष्य ने कैसी-कैसी चीज़ें बनाई हैं ?

(ग) एक शब्द में उत्तर दो —

(1) तुम कौन-सा साधन पसन्द करते हो? साइकिल / स्कूटर / कार

(2) तेज़ रफ़्तार में कौन आगे है? हवाई जहाज़ / रॉकेट

(3) कौन-सी सवारी माल लादने के लिए उपयुक्त है? कार / ट्रक

(घ) इन साधनों में पहले कौन आया, क्रम से लिखो —

बैलगाड़ी, नाव, भाप का इंजन, पानी का जहाज़, डीज़ल का इंजन, बिजली का इंजन।

पाठ – 25

पथिक

भटका-भटका क्यों फिरता है, मन का चोर निकाल ।
यह मन पापी तेरे आगे सदा बिछाए जाल ।
मन की चिकनी-चुपड़ी बातों से सदा रहना आगाह ।
तेरे साथ अल्लाह रे पंथी, तेरे साथ अल्लाह ।।1।।
रोड़ा अटके, काँटा खटके, तलवे में हो फाँस ।
पाँव थके, छाले पड़ जाएँ, फूले तेरी साँस ।
फिर भी आगे देख, अगर कुछ मंज़िल की है चाह ।
तेरे साथ अल्लाह रे पंथी, तेरे साथ अल्लाह ।। 2 ।।
बादल गरजे बिजली कड़के, छाए घटा घनघोर ।
रिमझिम-रिमझिम पानी बरसे, उमड़े चारों ओर ।
आख़िर तुझको डर काहे का, पानी हो बेथाह ।
तेरे साथ अल्लाह रे पंथी, तेरे साथ अल्लाह ।। 3 ।।
चोर, उचक्के, ठग और डाकू, जब लें रस्ता रोक ।
हे 'माइल'☆ खुद आगे बढ़कर उनको देना टोक ।
उनके साथ मशीनें-तोपें, लश्कर, फ़ौज, सिपाह ।
तेरे साथ अल्लाह रे पंथी, तेरे साथ अल्लाह ।। 4 ।।

☆ कवि का नाम

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो –

मन का चोर = दिल की छिपी बात
पापी = गुनाहगार
जाल बिछाना = फंसाना
आगाह = वाक़िफ़, परिचित रखना
पंथी = राही
रोड़ा अटकना = रुकावट अना
साँस फूलना = थकना, साँस चढ़ना
बेथाह = अथाह, बहुत गहरा

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो –

(1) मन को पापी क्यों कहा गया है?

(2) हमारे साथ हमेशा कौन रहता है?

(3) कवि मंज़िल की चाह क्यों पैदा करना चाहता है?

(4) इस कविता में किससे डरने को मना किया गया है?

(5) यहाँ किन लोगों को सही मार्ग दिखाने को कहा गया है?

(ग) ख़ाली जगहों को भरो –

(1) तेरे साथ .... रे ...., तेरे साथ .... ।

(2) .... थके .... पड़ जाएँ, फूले तेरी .... ।

(3) उनके साथ .... तोपें, लश्कर, ... सिपाह ।

(घ) करो –

इस कविता को याद करो ।

व्याकरण

(क) इन मुहावरों के अर्थ लिखो –

मन का चोर, जाल बिछाना, साँस फूलना, रोड़ा अटकाना, काँटा खटकना ।

पाठ – 26

कर्तव्यपालन

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर *(रज़ि॰)* इस्लाम के दूसरे ख़लीफ़ा थे । अपने शासनकाल में बार वे शाम (सीरिया) गए । वहाँ से मदीना वापस आने पर वे रात में लोगों का हाल मालूम के लिए निकले । घूमते-घूमते वे एक ख़ेमे के पास से गुज़रे जिसके सामने एक बुढ़िया बैठी

हज़रत उमर *(रज़ि॰)* ने उसे सलाम किया, फिर पूछा, "अम्माँ! उमर का कुछ हाल मालूम ' वह बोली, "हाँ, सुना है शाम से सही-सलामत वापस आ गया है ।" हज़रत उमर *(रज़ि॰)* ने , " अम्माँ! उमर कैसा आदमी है?" बुढ़िया ने जवाब दिया, "अल्लाह उससे समझे ।" त उमर *(रज़ि॰)* ने पूछा, "क्यों अम्माँ, उसने क्या किया?" बुढ़िया ने कहा, "जब से वह फ़ा बना है उसने मुझे फूटी कौड़ी तक नहीं दी । क्या उसको मालूम नहीं है कि उसके राज्य में बुढ़िया कितनी तंगी में गुज़ारा कर रही है ।"

हज़रत उमर *(रज़ि॰)* ने कहा, "अम्माँ! जब तक तुम खुद जाकर उमर को अपना हाल न ओगी उसे क्या ख़बर कि इतने बड़े राज्य में कोई ग़रीब बुढ़िया भी रहती है ।" बुढ़िया बोली, ' बेटा! यह तुमने ख़ूब कही । यह कैसा राज्य है जिसका शासक अपनी प्रजा के हाल से ब्रर है?"

यह सुनकर हज़रत उमर *(रज़ि॰)* की आँखों में आँसू आ गए । उन्होंने कहा, "तुम्हें उ
जो कष्ट पहुँचा है, तुम उसे किस शर्त पर क्षमा करोगी? मैं उसको अल्लाह की नाराज़गी से ब
चाहता हूँ ।" बुढ़िया ने कहा, "जा बेटे, अपना काम कर । मुझसे मज़ाक़ न कर ।"

हज़रत उमर *(रज़ि॰)* ने कहा, "अम्माँ! मैं मज़ाक़ नहीं करता, सच कहता हूँ । तुम जो
लेना चाहती हो, मुझसे अभी लो और उमर को माफ़ कर दो ।" बुढ़िया कुछ देर सोचती रही ।
बोली "अगर तुम मुझे पच्चीस दीनार दे दो तो मैं उमर को माफ़ कर दूँगी ।"

हज़रत उमर *(रज़ि॰)* ने उसे तुरन्त पच्चीस दीनार दे दिए और वह खुश होकर दुआएँ
लगी, "अल्लाह उमर को माफ़ करे और उसपर दया करे ।"

इतने में हज़रत अली *(रज़ि॰)* और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद *(रज़ि॰)* उधर आ निक
उन्होंने आते ही कहा, "अस्सलामु अलैकुम ऐ अमीरुल मोमिनीन ।" अब बुढ़िया को पता चल
वह जिससे बातें कर रही थी वह कोई और नहीं हज़रत उमर *(रज़ि॰)* ही थे । बेचारी बहुत डरी
कहने लगी, "अमीरुल मोमिनीन! मैं आपको पहचानती न थी इसलिए जो मुँह में आया, कह
मुझे माफ़ कर दीजिए ।"

हज़रत उमर *(रज़ि॰)* ने कहा, "अम्माँ! तुमने तो अच्छा किया कि अपना हाल मुझको
दिया । तुमने जो कुछ कहा, वह सच था । इसपर पछताना क्या!" फिर उन्होंने चमड़े के एक टु
पर लिखा, "अत्यन्त दयावान व कृपाशील अल्लाह के नाम से । अपने शासन के आरम्भ से
तक उमर की उपेक्षा के कारण बुढ़िया को जो तकलीफ़ पहुँची है, उसके बदले उमर ने उ
पच्चीस दीनार देकर राज़ी कर लिया है । अब यह बुढ़िया क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने
की शिकायत नहीं करेगी । इसपर अली और अब्दुल्लाह गवाह हैं ।"

बुढ़िया को यह लेख सुनाया गया तो कहने लगी, "बेशक, बेशक! उमर से मैं भी खु
मेरा खुदा भी खुश ।"

अभ्यास

इन शब्दों के अर्थ याद करो –

प्रजा = जनता

क्षमा करना = माफ़ करना

दयावान = रहम करनेवाला, कृपाशील

उपेक्षा करना = नज़रअन्दाज़ करना, ध्यान न देना

इन प्रश्नों के उत्तर लिखो –

(1) हज़रत उमर *(रज़ि॰)* लोगों का हाल कैसे मालूम करते थे?

(2) बुढ़िया हज़रत उमर *(रज़ि॰)* से क्यों नाराज़ थी?

(3) शासक का उत्तरदायित्व क्या होता है?

(4) हज़रत उमर *(रज़ि॰)* ने बुढ़िया को कैसे मनाया?

(5) बुढ़िया ख़लीफ़ा से क्यों डरी ?

(6) हज़रत उमर *(रज़ि॰)* ने चमड़े पर क्या लिखा और किसे गवाह बनाया?

किसने किससे कहा –

(1) "यह तुमने ख़ूब कही ।"

(2) "मुझसे मज़ाक़ न कर ।"

(3) "मैं मज़ाक़ नहीं करता ।"

व्याकरण

नीचे लिखे शब्दों का बहुवचन बनाओ –

(1) ख़बर = ख़बरें

(2) ख़ेमा = ...

(3) बेटा = ...

(4) बात = ...

(5) लड़का = ...

(6) आँख = ...

(7) ख़ुशी = ...

पाठ – 27

हम ये करेंगे

• अल्लाह एक है, उसको एक मानेंगे ।

• अल्लाह ही सबका स्वामी है, उसी को स्वामी मानेंगे

• अल्लाह के सारे रसूल सच्चे हैं, रसूलों को सच्चा जानेंगे । हज़रत मुहम्मद अन्तिम रसूल (ईशदूत) हैं । आप *(सल्ल०)* ही जग के नायक हैं । हम आप *(सल्ल०)* ही की करेंगे ।

• क़ुरआन मजीद अल्लाह की किताब है । उसमें हमारे जीवन के लिए मार्गदर्शन है क़ुरआन मजीद पढ़ेंगे । क़ुरआन मजीद की शिक्षा पर अमल करेंगे ।

• हदीस में प्यारे रसूल *(सल्ल०)* की शिक्षाएँ हैं । हम हदीस पढ़ेंगे । हदीस के अ आचरण करेंगे ।

• हम इस्लाम पर चलेंगे, उसे फैलाएँगे और क़ायम करेंगे ।

• नमाज़ पढ़ेंगे, नमाज़ के पाबन्द बनेंगे और दूसरों को भी नमाज़ पढ़ने की ताकीद क

• लिखेंगे, पढ़ेंगे, ज्ञान प्राप्त करेंगे । सारे संसार में अल्लाह का सन्देश पहुँचाएँगे ।

• नेक बनेंगे, नेकी फैलाएँगे । जग से बुराई और अन्याय मिटाएँगे । ऊँच-नीच क मिटाकर सबको गले लगाएँगे ।

• माता-पिता ने हमपर बहुत उपकार किए हैं। हमें पाला-पोसा है। हमारे लिए कष्ट सहे हैं। उनकी सेवा करेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करेंगे।

• शिक्षक ने हमें ज्ञान दिया है। जीने का ढंग सिखाया है। हम उनका आदर करेंगे।

ऐ अल्लाह ! हमें इस योग्य बना और हमपर दया कर !!

अभ्यास

इन शब्दों के अर्थ याद करो —

नायक = रहनुमा

आचरण = व्यवहार

ज्ञान = इल्म

अन्याय = नाइन्साफ़ी, ज़ुल्म

उपकार = भलाई

कष्ट = तकलीफ़

योग्य = लायक़

इन प्रश्नों के उत्तर लिखो —

(1) सबका स्वामी कौन है? हमें किसकी बन्दगी करनी चाहिए?

(2) हज़रत मुहम्मद *(सल्ल॰)* कौन हैं?

(3) क़ुरआन किसकी किताब है और उसमें क्या है?

(4) हदीस किसे कहते हैं और हदीस में क्या है?

(5) हम माता-पिता की सेवा क्यों करें?

(6) हमें किस प्रकार का आदमी बनना है?

(7) शिक्षक ने हमें कैसा ज्ञान दिया?

(8) हमें दूसरों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए?

(ग) वाक्य पूरे करो —

(1) अल्लाह ही सबका .... है।

(2) क़ुरआन मजीद .... की किताब है।

(3) .... में प्यारे नबी *(सल्ल॰)* की शिक्षाएँ हैं।

(4) सारे संसार में अल्लाह का .... पहुँचाएँगे।

(5) .... ने हमें ज्ञान दिया है।

व्याकरण

(क) लिंग बदलो —

लड़का = लड़की	चाचा = ...
दादी = ...	मोर = ...
पुत्र = ...	घोड़ा = ...
बकरी = ...	मुर्ग़ी = ...

पाठ – 28

पहेली

एक महल है नीला-नीला ।
लम्बा-चौड़ा और सजीला ॥
चमके उसमें चन्दा-तारे ।
जगमग-जगमग, प्यारे-प्यारे ॥

सूर्य-चन्द्र के दीपक जलते ।
सारे जग को रौशन करते ॥
छत देखो तो हो अचंभा ।
छत है लेकिन नहीं है खंभा ॥

फाटक उसमें एक नहीं है ।
जाता पर हर एक वहीं है ॥
ज़ितने लोग वहाँ जाते हैं ।
कभी नहीं वापस आते हैं ॥

हमको-तुमको भी जाना है ।
वापस मगर नहीं आना है ॥
उसका स्वामी ऐसा राजा ।
सारी दुनिया जिसकी प्रजा ॥

राज उसी का जग में चलता।

चहुँदिश उसका डंका बजता॥

क्या है महल, कौन है राजा?

जो बूझे सो खाए खाजा॥

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

सजीला = सुन्दर

दीपक - चिराग़

अचंभा = हैरानी, ताज्जुब

चहुँदिश = चारों तरफ़

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो —

(1) इस पहेली में राजा कौन है?

(2) यहाँ महल किसको कहा गया है?

(3) आदमी इस महल में कब जाता है?

(ग) करो —

इस पहेली को याद करो और कक्षा में सुनाओ।

व्याकरण

(क) विलोम शब्द लिखो —

जैसे - **स्वामी दास**

सूर्य .... राजा ....

लम्बा .... महल ....

आना ....

पाठ – 29

त्यागी सेनापति

एक समय की बात है । यरूशलम की विजय के अवसर पर द्वितीय ख़लीफ़ा हज़रत उमर
। वहाँ बुलाए गए । सेना नें उनका स्वागत किया । प्राय: सभी सेना-अधिकारियों ने उनकी दावत
किन्तु हज़रत अबू उबैदा *(रज़ि॰)* ने आपको आमंत्रित न किया । हज़रत उमर *(रज़ि॰)* समझ गए
कोई कारण ज़रूर है । एक दिन हज़रत उमर *(रज़ि॰)* ने उनसे पूछ ही लिया : "सब लोगों ने
अपने यहाँ आमंत्रित किया, परन्तु आपने ऐसा न किया, इसका कारण क्या है?"

हज़रत अबू उबैदा *(रज़ि॰)* ने उत्तर दिया : "अमीरुल मोमिनीन! मैं आपको किसी प्रकार का
देना नहीं चाहता था ।"

"मैं किसी बात से दुखी न हूँगा", अमीरुल मोमिनीन ने उत्तर दिया ।

अत: एक दिन हज़रत अबू उबैदा *(रज़ि॰)* ने अमीरुल मोमिनीन को आमंत्रित किया ।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू उबैदा *(रज़ि॰)* के ख़ेमे में पहुँचे । उन्होंने देखा कि वहाँ एक
: का नमदा पड़ा है, दूसरी ओर घोड़े की ज़ीन पड़ी हुई है और ज़िरह-बकतर और हथियारों के
। एक थैला टँगा है ।

हज़रत अबू उबैदा *(रज़ि॰)* ने अमीरुल मोमिनीन को नमदे पर बिठाया । उनके आगे अपनी
:र बिछा दी । थैले से सूखी रोटी निकालकर आपके सामने रख दी, जिसके साथ नमक भी था ।

अमीरुल मोमिनीन यह देखकर स्तब्ध रह गए । बरबस ही उनकी आँखों से आँसू पड़े । उन्होने हज़रत अबू उबैदा *(रज़ि॰)* को प्रेमपूर्वक सीने से लगा लिया और बोले : "अबू उ तुम मेरे भाई हो, तुम्हारे सिवा दूसरे लोगों में शायद ही कोई ऐसा हो जिसने दुनिया का कु कुछ मज़ा न चख लिया हो ।"

हज़रत अबू उबैदा *(रज़ि॰)* ने जवाब में इतना ही कहा : "अमीरुल मोमिनीन! इसी लिए आपको आमंत्रित नहीं किया था कि कहीं आपको कष्ट न पहुँचे ।"

युद्ध के मैदान में उस सेनापति का यह आदर्श जीवन था जिसने यरूशलम और (सीरिया) के बहुत बड़े भूभाग पर विजय प्राप्त की थी, वहाँ इस्लामी राज्य स्थापित किया उन्होंने सांसारिक ऐश्वर्य के सारे साधन उपलब्ध रहने पर भी उन्हें त्याग दिया था । ये रा उपासक थे और दिन में युद्ध के मैदान के सिपाही । उनकी विजय स्वयं सुख भोगने के लिए बल्कि दूसरों को सुख पहुँचाने और उनके दुख बाँटने के लिए थी ।

सांसारिक सुख क्षणभंगुर है । उसको संचित करनेवाला मूर्ख है । स्थायी सुख तो परलोक ही सुख है । इसलिए उन्हें केवल परलोक की सफलता की कामना थी । ईश्वर की प्रसन्नता करके ही परलोक के अक्षय जीवन को सफल बनाया जा सकता है । उस अनन्त सुख की आश लोग रखते हैं वही इस संसार में त्याग और साधना का कष्टपूर्ण जीवन ईमानदारी से बिता र हैं ।

अभ्यास

क) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

विजय = जीत, फ़तह

स्वागत = आदर, इज़्ज़त

ख़ेमा = पड़ाव, रहने की अस्थायी जगह

त्याग देना = छोड़ देना

क्षणभंगुर = कुछ ही पलों में नष्ट हो जानेवाला

अक्षय = जिसका कभी क्षय न हो, हमेशा बाक़ी रहनेवाला

ख़लीफ़ा = इस्लामी राज्य का प्रमुख

आमंत्रित करना = बुलाना

ऐश्वर्य = सुख, आराम

उपासक = उपासना करनेवाला

संचित करना = इकट्ठा करना

अनन्त = जिसका अन्त नहीं

परलोक = मृत्यु के बाद का जीवन

(ख) इन प्रश्नों के उत्तर लिखो —

(1) हज़रत अबू उबैदा *(रज़ि॰)* कौन थे?

(2) हज़रत उमर *(रज़ि॰)* की आँखों से आँसू क्यों टपक पड़े?

(3) उनकी विजय किस लिए थी?

(4) हज़रत अबू उबैदा *(रज़ि॰)* ने अपने सुख-साधन की व्यवस्था क्यों नहीं की?

(5) ईमानदार होने के लिए परलोक का विश्वास क्यों आवश्यक है?

(ग) रिक्त स्थानों को भरो —

(1) अमीरुल मोमिनीन को .... पर बिठाया।

(2) थैले से .... रोटी निकालकर आपके .... रख दी।

(3) .... के मैदान में उस सेनापति का यह .... जीवन था।

व्याकरण

(क) नीचे लिखे वाक्यों से सर्वनाम चुनकर लिखो –

(1) वह बहुत अच्छा लड़का है।

(2) यह गाय खूब दूध देती है।

(3) कोई आ रहा है।

(4) कुछ खा लो।

(5) जिसकी लाठी उसकी भैंस।

(6) आप जा रहे हैं न?

(ख) रिक्त स्थानों को दिए गए सर्वनाम से पूरा करो –

(1) .... जानते हो कि ताजमहल विश्व की सुन्दर इमारतों में से एक है।

(हम / तुम /

(2) .... दौड़ा। (वे / हम / व

(3) राशिद ने आरिफ़ से कहा, "......... भी तुम्हारे साथ चलूँगा।" (तुम / हम /

(4) उसने मुझसे कहा, "................ आ रहे हैं।" (वह / वे / तु

पाठ – 30

दोहे

विद्या धन उद्यम बिना, कहो जु पावै कौन ।
बिना डुलाए नहिं मिले, ज्यौं पंखे का पौन ॥

करत-करत अभ्यास के, जड़मति हो सुजान ।
रसरी आवत जात तें, सिल पर परत निसान ॥

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब ।
पल में परलय होयगो, बहुरी करेगा कब ॥

जाको राखे साइयाँ, मारि सकै ना कोय ।
बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय ॥

दु:ख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करें, दु:ख काहे को होय ॥

जो तो को काँटा बुवै, ताहि बोय तू फूल ।
तो को फूल के फूल हैं, वाको हैं तिरसूल ॥

'रहिमन' धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय ।
टूटे पे फिर ना जुरै, जुरै गाँठ परि जाय ॥

दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखै न कोय ।
जो 'रहीम' दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय ॥

'रहिमन' निज मन की व्यथा, मन हीं राखौ गोय ।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय ॥

'रहिमन' वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहि ।
उनते पहिले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहि ॥

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय ।
औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय ॥

साईं इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय ।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय ॥

अभ्यास

(क) इन शब्दों के अर्थ याद करो —

उद्यम = मेहनत	पौन = हवा
जड़मति = मूर्ख	सुजान = विद्वान
परलय = क़ियामत	जाको = जिसको
साइयाँ = ईश्वर, अल्लाह	सुमिरन = जप, भजन
तिरसूल = त्रिशूल, काँटे	जुरै = जुड़े
परि = पड़ना	सबन = सब
लखत = देखता है	दीनहि = ग़रीब को
दीन बन्धु = ग़रीबों के दोस्त	लैहैं = लेंगे
निकसत = निकलता है	नाहि = नहीं
आपा = होश-हवास	सीतल = शीतल, ठंडा
कुटुम = परिवार	

(ख) नीचे लिखे शब्दों की खड़ी बोली का रूप लिखिए —

तोरो = तोड़ो	जुरै = ...	सबन = ...
लखत = ...	कोय = ...	पावै = ...
रसरी = ...	सिल = ...	सीतल = ...

(ग) इन प्रश्नों के उत्तर दो —

(1) विद्या कैसे प्राप्त की जा सकती है?

(2) बार-बार अभ्यास करने से क्या लाभ मिलता है?

(3) आज का काम कल पर क्यों नहीं छोड़ना चाहिए?

(4) हमें किस प्रकार की वाणी बोलनी चाहिए?

(घ) खाली जगहों को भरो –

(1) करत-करत अभ्यास .... होत .... ।

रसरी आवत जात तें, ... परत ....॥

(2) 'रहिमन' वे नर ....चुके, जे कहुँ ....जाहिं ।

उनते पहिले वे .... जिन मुख निकसत .... ॥

करो –

किन्ही पाँच दोहों को याद करके पाँच-पाँच बार लिखो ।